कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 20 अक्टूबर 2025 वर्ष-80 अंक - 8 मूल्य-रू. 12/- कुल पृष्ठ-20 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

सोलर पंप पर अब 90 फीसदी सब्सिडी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सोयाबीन किसानों के लिए भावांतर भुगतान योजना शुरू

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हमारे किसान भाई हैं, और किसानों का हित हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार किसानों की आय बढ़ाने और उनकी माली हालत सुधारने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित 'किसान आभार सम्मेलन' को संबोधित कर रहे थे।

यह सम्मेलन सोयाबीन पर भावांतर भुगतान के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा, 'यह निवास किसानों का घर है, जब चाहें यहाँ आएँ।' उन्होंने किसानों से गोवर्धन पूजा मनाने की अपील की और कहा कि यह त्यौहार राज्य सरकार के स्तर पर मनाया जाएगा। (शेष पृष्ठ 3 पर)

किसानों के लिए बड़ी घोषणाएँ

- सोलर पंप पर अब 90% सब्सिडी दी जाएगी (पहले 40%)।
- किसानों को एक स्टेप अधिक क्षमता का सोलर पंप मिलेगा –
  3 HP वाले किसान को 5 HP
  5 HP वाले किसान को 7.5 HP का सोलर पंप मिलेगा।
- 32 लाख किसानों को सोलर पंप दिए जाएंगे।
- राज्य में सिंचाई का रकबा 100 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन, पीएम धन-धान्य कृषि योजना

किसानों को योजनाओं का लाभ समय पर मिले, सरकार की प्राथमिकता : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' और 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' से संबंधित एक उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इन दोनों महत्वाकांक्षी योजनाओं के समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष चर्चा की गई। श्री चौहान ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के त्वरित क्रियान्वयन के लिए 11 मंत्रालयों के मंत्रियों और नीति आयोग के अधिकारियों के साथ जल्द ही बैठक की जाए, ताकि योजना का समन्वित लाभ किसानों तक पहुँच सके।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन पर ज़िलेवार क्लस्टर मॉडल

बैठक में बताया गया कि 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन को जिलेवार क्लस्टर बनाकर लागू किया जाएगा, जिसके लिए राज्यों से सक्रिय सहयोग लिया जा रहा है। श्री चौहान ने राज्यों के 'नोडल अधिकारियों के साथ जल्द बैठक आयोजित' करने के भी निर्देश दिए हैं, ताकि इस मिशन को जमीनी स्तर पर सफलता के साथ लागू किया जा सके।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना: 100 आकांक्षी जिलों पर फोकस

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना को प्रधानमंत्री ने गत 11 अक्टूबर 2025 को दिल्ली के पूसा में आयोजित कार्यक्रम में लॉन्च किया था। यह योजना देश के 100 आकांक्षी जिलों में कृषि उत्थान के लिए 11 मंत्रालयों की 36 उप-योजनाओं को समन्वित करती है। इस योजना का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में समग्र विकास, उत्पादकता में वृद्धि, और किसानों की आमदनी में सुधार करना है।

वित्तीय परिव्यय और लक्ष्य

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना को वर्ष 2025-26 से छह वर्षों के लिए लागू किया गया है, जिसका वार्षिक परिव्यय रू. 24,000 करोड़ निर्धारित किया गया है।

वहीं, 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' के लिए रू. 11,440 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030-31 तक –

- दलहन क्षेत्रफल को 275 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 310 लाख हेक्टेयर करना।
- दलहन उत्पादन को 242 लाख टन से बढ़ाकर 350 लाख टन तक ले जाना।
- उत्पादकता को 1130 किग्रा/हेक्टेयर तक पहुँचाना है।

इन पहलों के तहत दलहन उत्पादकता बढ़ने के साथ-साथ बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की भी संभावना है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

कृषक जगत के सुधी पाठकों को जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। इस अंक के साथ लक्ष्मीजी का आकर्षक पाना सप्रेम भेंट।

खरीफ बुवाई में बढ़ोतरी, बेहतर उपज की उम्मीद

म.प्र. में सोयाबीन फसल नुकसान पर मिलेगा क्लेम

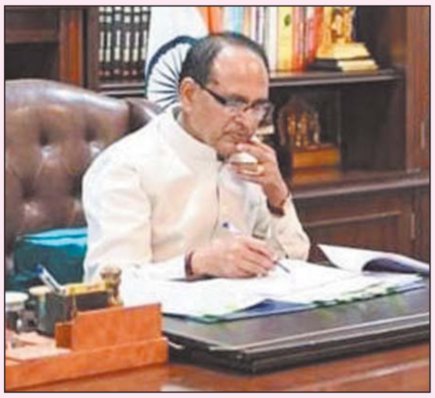

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने एक उच्चस्तरीय बैठक में कृषि क्षेत्र की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में देशभर में खरीफ फसल की स्थिति, रबी फसल की बुवाई, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फसलों की स्थिति, मूल्य स्थिति, उर्वरक उपलब्धता, जलाशयों की स्थिति सहित विभिन्न विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। साथ ही अपने संसदीय क्षेत्र विदिशा में भी बैठक कर किसानों को नुकसान से राहत दिलाने तथा कृषि आदानों की पर्याप्त व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। श्री चौहान ने इस दौरान विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

नई दिल्ली की बैठक में अधिकारियों ने खरीफ की बुवाई के संबंध में बताया कि खरीफ फसलों के तहत कुल क्षेत्रफल कवरेज पिछले वर्ष की तुलना में 6.51 लाख हेक्टेयर अधिक है। कुल बुवाई क्षेत्र 1121.46 लाख हेक्टेयर है, जबकि गत वर्ष यह 1114.95 लाख हेक्टेयर था। गेहूं, धान, मक्का, गन्ना और दलहन की बुवाई भी वर्ष 2024-25 की तुलना में अधिक हुई है। बैठक में उड़द बुवाई क्षेत्रफल में वृद्धि की भी जानकारी देते हुए बताया गया कि उड़द के क्षेत्रफल में 1.50 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। वर्ष 2024-25 में उड़द का बुवाई क्षेत्रफल 22.87 लाख हेक्टेयर था, जो वर्ष 2025-26 में बढ़कर 24.37 लाख हेक्टेयर हो गया है।

वहीं श्री चौहान ने अपने संसदीय क्षेत्र के रायसेन जिले में खाद की उपलब्धता की समीक्षा की और जिले के जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिलाधिकारियों से पूरी जानकारी ली। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि किसानों को कहीं भी कोई दिक्कत नहीं होना चाहिए, इसके लिए समुचित व्यवस्थाओं के निर्देश देते हुए श्री शिवराज सिंह ने कहा कि किसानों को लाइन में नहीं लगना पड़े, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। केंद्रीय कृषि मंत्री ने सभी प्रशासनिक अधिकारियों से कहा कि जितना डीएपी की आवयश्कता है, वो बता दें, मैं दिल्ली में भी बात करूंगा तथा खाद वितरण की अभी क्या व्यवस्था है, इसे भी सुदृढ़ करें और सुनिश्चित करें कि कालाबाजारी न हो, डायवर्ट न हो, जहां के लिए खाद आई है, वहीं बिके।

एक अन्य महत्वपूर्ण विषय पर श्री शिवराज सिंह बोले कि स्थानीय अधिकारी सोयाबीन की फसल के नुकसान का सही आकलन कर भेजेंगे तो किसानों को क्लेम के पैसे दिलाने की जिम्मेदारी मेरी है। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि आरबी 6/4 के प्रावधान और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से हम किसानों को राहत दिलाएंगे।

सीआईएई पुरस्कृत

आईसीएआर-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (सीआईएई) भोपाल के निदेशक डॉ. सी. आर. मेहता की अध्यक्षता वाली कृषि मशीनरी एवं उपकरण अनुभागीय समिति, एफएडी-11 को बीआईएस द्वारा 2024-25 के लिए सर्वश्रेष्ठ अनुभागीय समिति का पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार उपभोक्ता मामलों के राज्य मंत्री श्री बी. एल. वर्मा द्वारा विश्व मानक दिवस 2025 के अवसर पर एनआईटीएस नोएडा में प्रदान किया गया। समिति के सभी सदस्यों और कृषि मशीनरी समुदाय को इस पुरस्कार और समिति में उनके योगदान के लिए बधाई।

खाद्य सुरक्षा में भारत आत्मनिर्भर : डॉ. चतुर्वेदी

विश्व खाद्य दिवस 2025 पर एफएओ के साथ भागीदारी के 80 साल पूरे

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने विश्व खाद्य दिवस 2025 एवं कृषि संगठन (एफएओ) की 80वीं वर्षगांठ के अवसर पर खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने, फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने तथा नवाचार और बेहतर कार्यप्रणाली के माध्यम से किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में एफएओ की तकनीकी विशेषज्ञता और मंत्रालय के साथ स्थायी साझेदारी की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भविष्य में पोषण- कृषि पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जिससे सभी के लिए स्वस्थ, विविध, सुरक्षित और किफायती आहार सुनिश्चित हो सके।

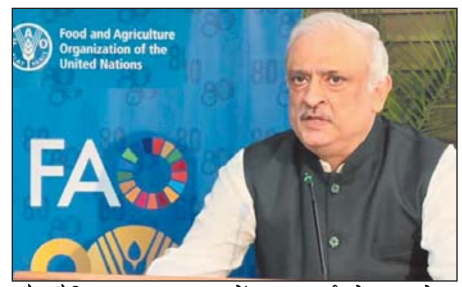

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि स्वतंत्रता के समय खाद्यान्न की कमी से जूझने वाला भारत अब खाद्यान्न आधिक्य वाले राष्ट्र में तब्दील हो गया है, जो 1.4 अरब लोगों को भोजन उपलब्ध कराता है और वैश्विक खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन दूरदर्शी नीतियों, वैज्ञानिक नवाचार और एफएओ के साथ नजदीकी साझेदारी में मंत्रालय के नेतृत्व में मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग से प्रेरित है। इस कार्यक्रम में भारत में संयुक्त राष्ट्र के रेजिडेंट को-ऑर्डिनेटर श्री शोम्बी शार्प और भारत में एफएओ के प्रतिनिधि श्री ताकायुकी हागिवारा भी उपस्थित थे।

आईसीएआर ने गेहूं और जौ की 28 नई किस्मों को मंजूरी दी

किसानों को मिलेगा बेहतर उत्पादन और रतुआ रोग से छुटकारा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश के किसानों के लिए खुशखबरी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने गेहूं और जौ की 28 नई किस्मों को मंजूरी दे दी है, जो आगामी बुवाई सीजन में किसानों के लिए उपलब्ध होंगी। इन किस्मों में से 23 गेहूं की और 5 जौ की किस्में शामिल हैं। यह मंजूरी ऐसे समय में दी गई है जब गेहूं की बुवाई का मौसम शुरू हो चुका है और किसान बेहतर बीजों की तलाश में हैं, जो उनके उत्पादन को बढ़ावा दे सकें और फसलों को विभिन्न रोगों से बचा सकें। इस नई पहल से किसान रतुआ रोग से बचाव के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक प्रतिरोधी किस्मों का लाभ उठा सकेंगे, जिससे उनकी फसल की सुरक्षा और उत्पादन क्षमता में सुधार होगा।

आईसीएआर के सहायक महानिदेशक श्री एस. के. प्रधान की अध्यक्षता में अगस्त में हुई एक महत्वपूर्ण बैठक में 46 नई किस्मों की समीक्षा की गई थी, जिनमें से 28 को अंतिम मंजूरी दी गई। इन किस्मों में 23 गेहूं की और जौ की 5 किस्में शामिल हैं, जिन्हें सरकारी संस्थाओं और निजी कंपनियों

द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस चयन में विशेष रूप से पीबीडब्ल्यू 915 और पीबीडब्ल्यू 906 जैसी गेहूं की किस्में शामिल हैं, जो उत्तर-पूर्वी और मध्य भारत में रतुआ रोग के प्रति उच्च प्रतिरोध और बेहतर उपज क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

कृषि मंत्री ने जताई ये चिंता

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने इस बात पर चिंता जताई है कि किसानों द्वारा कुछ किस्मों को व्यावसायिक स्तर पर अपनाया नहीं जाता, जबकि वे मान्यता प्राप्त होती हैं। उन्होंने यह सवाल उठाया कि आखिरकार ऐसी किस्मों को व्यावसायिक रूप से क्यों जारी किया जाता है जिन्हें किसान नहीं अपनाते। उनका मानना है कि किस्मों के अनुमोदन में अधिक पारदर्शिता और सावधानी बरती जानी चाहिए, ताकि केवल उन बीजों को ही मंजूरी मिले, जो किसानों के लिए व्यावसायिक दृष्टिकोण से उपयुक्त हों।

PAU और IIWBR की किस्मों को मंजूरी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (PAU) ने कुल चार गेहूं किस्मों के लिए मंजूरी की मांग की थी, जिनमें से दो - पीबीडब्ल्यू 906 और पीबीडब्ल्यू 915 को मंजूरी मिल गई।

पीबीडब्ल्यू 915 को विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त माना गया है, जहां यह रतुआ रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता और उच्च उपज प्रदान करता है। वहीं, पीबीडब्ल्यू 906 मध्य भारत में बेहतर उत्पादन के लिए उपयुक्त साबित हुआ है। इसके अलावा, भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान द्वारा पेश की गई जौ की तीन किस्मों को भी मंजूरी दी गई है, जो किसानों के लिए एक बड़ी राहत है।

भारत में गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन का अनुमान

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, भारत का गेहूं उत्पादन वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 117.51 मिलियन टन रहने की उम्मीद है, जिसमें से 30

मिलियन टन की सरकारी खरीद भी शामिल होगी। सरकार का इस वर्ष 119 मिलियन टन का उत्पादन लक्ष्य है। विशेषज्ञों का मानना है कि समय पर बीजों की मंजूरी और उच्च उपज देने वाली किस्मों का चयन किसानों को इस लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करेगा।

प्रदेश में पहली बार कोदो-कुटकी की समर्थन मूल्य पर होगी खरीदी

जनजातीय किसानों को मिलेगा बड़ा लाभ

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में किसानों के हित में कई बड़े निर्णय लिए गए हैं। इन निर्णयों से विशेष रूप से जनजातीय अंचलों के किसान सोयाबीन उत्पादक एवं रेशम पालक किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। कोदो-कुटकी के लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के तहत प्रमुख उत्पादक जिलों जबलपुर, कटनी, मण्डला, डिंडोरी, छिंदवाडा, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, रीवा, सीधी एवं सिंगरौली के कृषकों से उपार्जन किया जायेगा। साथ ही अन्य जिलों से मांग आने पर उन जिले के कृषकों से भी उपार्जन किये जाने पर विचार किया जायेगा।

एमएसपी पर खरीदी ऐतिहासिक निर्णय

सरकार ने पहली बार प्रदेश के 11 जिलों में कोदो और कुटकी की समर्थन मूल्य पर खरीदी करने का फैसला किया है। यह खरीदी रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के तहत की जाएगी।

कीमत : कुटकी – रु. 3500/क्विंटल

कोदो – रु. 2500/क्विंटल

प्रोत्साहन राशि : किसानों को अलग से रु. 1000/क्विंटल सीधे खाते में डीबीटी के माध्यम से मिलेगी।

लक्ष्य: 30 हजार मीट्रिक टन अनाज की खरीदी

उपार्जन संस्था: श्रीअन्न फेडरेशन (Farmer Producer Company)

ब्याज मुक्त ऋण: रु. 80 करोड़ श्रीअन्न फेडरेशन को मूल्य स्थिरीकरण कोष से। यह निर्णय जनजातीय किसानों की आजीविका बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सोयाबीन किसानों के लिए भावांतर योजना

सरकार ने खरीफ 2025 के लिए सोयाबीन पर भावांतर भुगतान लागू करने की मंजूरी दी है।

विक्रय अवधि: 24 अक्टूबर 2025 से 15 जनवरी 2026, **एमएसपी :** रु. 5328/क्विंटल

तरीका : ● किसान मंडी में फसल बेचेंगे

● 14 दिन की औसत कीमत के आधार पर मॉडल रेट तय होगा

● एमएसपी और मॉडल रेट के बीच का अंतर किसानों को डीबीटी के माध्यम से मिलेगा।

रेशम समृद्धि योजना को मिली मंजूरी - 90 फीसदी तक अनुदान मिलेगा

अब रेशम उत्पादन से जुड़े किसानों को 23 गतिविधियों में आर्थिक सहायता मिलेगी।

सहायता अनुपात : सामान्य वर्ग– 75% तक, अनुसूचित जाति/जनजाति– 90% तक

नए लागत मानक : कुल लागत– रु. 5 लाख

एससी/एसटी – रु. 4.5 लाख तक सहायता

सामान्य वर्ग को रु. 3.75 लाख तक सहायता

यह योजना मलबरी और पोस्ट-ककून रेशम क्षेत्रों के किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी।

कृषक हित में लिया गया ठोस निर्णय

इन योजनाओं से जहाँ एक ओर जनजातीय और लघु किसानों की आमदनी बढ़ेगी, वहीं दूसरी

1000 रु./क्विंटल की प्रोत्साहन राशि भी मिलेगी

ओर प्रदेश में कृषि आधारित उद्यमिता और ग्रामीण रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा।

सोलर कृषि पंप पर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्यमंत्री ने कहा – 'सूखे खेत को अगर पानी दे दिया जाए तो फसल सोना बन जाती है। हमारी सरकार का लक्ष्य है कि प्रदेश के हर खेत तक पानी पहुँचे।' उन्होंने कहा कि अब किसान अन्नदाता के साथ ऊर्जादाता भी बन रहे हैं। सोलर पंप लगाकर किसान बिजली का खर्च बचा सकते हैं और अतिरिक्त बिजली सरकार को बेच सकते हैं।

भावांतर योजना - किसानों को मिलेगा पूरा हक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भावांतर योजना किसानों को बाजार में फसल के भावों के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा देती है। यह योजना सरकार और किसानों के बीच विश्वास का रिश्ता है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य : रु. 5328 प्रति क्विंटल।

किसान 24 अक्टूबर 2025 से 15 जनवरी 2026 तक मंडियों में उपज बेच सकेंगे।

फसल बेचने के 15 दिन के भीतर भावांतर की राशि किसानों के बैंक खातों में जमा होगी।

कार्यक्रम में 3 हजार से अधिक किसान नर्मदापुरम, भोपाल, सीहोर, राजगढ़, रायसेन और विदिशा जिलों से उपस्थित थे। इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल, सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर, सांसद, विधायकगण एवं अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। सीएम ने किसानों से गोवर्धन पूजा धूमधाम से मनाने की अपील की और कहा कि अब यह त्यौहार राज्य सरकार के स्तर पर मनाया जाएगा।

प्रतिस्पर्धा के दौर में शाखा प्रबंधक उत्कृष्ट कार्य करें : श्री गुप्ता

अपेक्स बैंक के शाखा प्रबंधकों की बैठक आयोजित

भोपाल (कृषक जगत)। अंतर्राष्ट्रीय सहकारी वर्ष-2025 के अवसर पर अपेक्स बैंक के समस्त शाखा प्रबंधकों की बैठक समन्वय भवन स्थित सभागार में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता ने की।

श्री गुप्ता ने शाखाओं के अमानत संग्रहण, ऋण वितरण, वसूली और बीमा योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रतिस्पर्धा के इस दौर में शाखा प्रबंधक अपने कार्य को ईमानदारी और लगन से करें। उन्होंने निर्देश दिए कि 22 अक्टूबर तक चल रहे बचत माह में ग्राहकों को विशेष ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराएं — ● आवास एवं अचल संपत्ति पर ऋण: 8.00% ●वाहन ऋण: 8.50% ● आवास ऋण : 9.00%

उन्होंने शाखाओं को माइक्रो एटीएम, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा, जीवन सुरक्षा बीमा और अटल पेंशन योजना के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुए अधिक से अधिक लोगों को इन योजनाओं से जोड़ने के निर्देश दिए। बैठक में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री संजय मोहन भटनागर ने शाखा प्रबंधकों से समयबद्ध कार्य सुनिश्चित करने की अपेक्षा की। उप महाप्रबंधक (ऋण/परिचालन) श्री के.टी. सज्जन ने ऋण वितरण व वसूली को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए, जबकि वि.क. अ. (सीबीएस) श्री अरविंद बौद्ध ने तकनीकी विषयों पर मार्गदर्शन दिया। बैठक में श्री आशीष राजौरिया, श्री करूण यादव, श्री विवेक मलिक, श्री समीर सक्सेना और श्री अजय देवड़ा सहित प्रदेश की सभी संभागीय और अमानत शाखाओं के प्रबंधक एवं अधिकारी उपस्थित थे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

आलस्य आपके लिये मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है। - स्वामी रामतीर्थ

दीपावली पर लें स्वदेशी का संकल्प

महात्मा गांधी स्वदेशी के प्रबल पक्षधर थे और उनका मानना था कि विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता भारत को कमजोर करती है। इसलिए स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने तथा उपयोग करने से देश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाया जा सकता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधीजी के नेतृत्व में स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए देशव्यापी आंदोलन चलाया गया था और विदेशी वस्त्रों तथा वस्तुओं को जलाकर देशवासियों के दिलों में स्वदेशी का मशाल जलाई थी। स्वतंत्रता के पश्चात औद्योगिकीकरण और वैश्वीकरण ने जोर पकड़ा जिसके चलते स्वदेशी का आंदोलन धीरे-धीरे कमजोर होता गया। इसके परिणाम स्वरूप बाजारों में विदेशी सामानों की बाढ़ सी आ गई। यह भी सत्य है कि भारत में शोध और विकास (आर.एंड डी.) पर बहुत कम ध्यान दिया गया जिसके परिणामस्वरूप हम विकसित देशों की तुलना में काफी पिछड़ गए। हालांकि अंतरिक्ष, रक्षा, परमाणु ऊर्जा, कृषि सहित अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है बावजूद इसके अभी भी खाने की वस्तुओं में दाल, खाद्य तेल आदि का आयात करना पड़ रहा है। अनेक विरोधाभाषी परिस्थितियों के बावजूद भी भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और चौथे स्थान पर आने के लिए अग्रसर हो रहा है। करीब दो माह पहले अमेरिका ने भारत पर भारत से अमेरिका निर्यात किए जाने वाले उत्पादों पर 50 प्रतिशत टेरिफ (शुल्क) लगाया है जिससे निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के निर्यातकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। भारत की जनसंख्या विश्व में सबसे अधिक है और भारत का बाजार भी बहुत बड़ा है। इसलिए अमेरिका सहित विश्व के अनेक देश भारत के बाजारों में अपना सामान बेचना चाहते हैं। अमेरिका द्वारा टेरिफ बढ़ाए जाने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अनेकों बार स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत के बारे में सार्वजनिक मंचों से देशवासियों से स्वदेशी उत्पादों/वस्तुओं का उपयोग करने का आह्वान किया है ताकि भारत में निर्मित और उत्पादित सामान/खाद्य पदार्थ की खपत भारत में ही हो और किसानों/ निर्माताओं को अपना सामान/उत्पाद के बेचने के लिए देश में ही बाजार खपाने के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। सैद्धांतिक रूप से स्वदेशी का नारा और स्वदेशी अपनाने का आह्वान देशवासियों को प्रभावित तो करता है लेकिन उपभोक्ताओं की भी कुछ व्यवहारिक समस्याएं हैं जिनके कारण वे विदेशी उत्पादों की ओर आकर्षित होते हैं। वैसे भी कहावत है 'घर का जोगी जोगड़ा, अन्य गांव का सिद्ध'। पिछले कुछ वर्षों से दीपावली के पहले बाजार सजावट और बिजली की झालरों से पट जाता है। चीनी सामान सस्ता होने के कारण उपभोक्ताओं का रूझान उन्हें सस्ती वस्तुएं खरीदने के लिए प्रेरित करता है। चीनी सामानों की तुलना में भारत में निर्मित सामान थोड़ा महंगा भी होता है। ऐसा नहीं है कि भारत में ये उत्पाद नहीं बन सकते। चीन, अमेरिका सहित जितने भी देशों से वस्तुएं आयात की जाती हैं, कुछ सामानों को छोड़कर सभी भारत में बनाई और उत्पादित की जा सकती हैं। लेकिन फिलहाल इस दिशा में अभी बहुत काम करना बाकी है। अब केंद्र और राज्य सरकारों की जिम्मेदारी बन जाती है कि वे किसानों और निर्माताओं को इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहित करें। निर्माताओं का भी दायित्व है कि वे गुणवत्तायुक उत्पादों का निर्माण करें और कीमतें भी प्रतिस्पर्धी हों ताकि उपभोक्ता भारत में ही निर्मित और उत्पादित वस्तुयें खरीदने के लिए प्रेरित हो सके। यदि वस्तुओं की गुणवत्ता बेहतर है तो उपभोक्ता अधिक कीमत चुकाने से नहीं हिचकते हैं। स्वदेशी के नाम पर उपभोक्ताओं के साथ धोखा नहीं होगा, इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? बेशक केंद्र और राज्य सरकारों को यह जिम्मेदारी होगी। सरकारों को अपना निगरानी तंत्र मजबूत और व्यापक करना होगा ताकि उपभोक्ताओं को गुणवत्तायुक वस्तुएं मिल सकें। यदि ऐसा करने में सफल रहते हैं तो निश्चित ही स्वदेशी उत्पादों की मांग घरेलु बाजार में बढ़ेगी और उपभोक्ताओं की स्वदेशी के प्रति आकर्षण में वृद्धि होगी। भारत की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी और देश आत्मनिर्भर होने की दिशा में अग्रसर होगा। रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। अब समय आ गया है कि स्वदेशी केवल नारा बनकर न रह जाए बल्कि एक आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो जाए। इस आंदोलन में सभी भारतीयों की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। इस दीपावली में प्रत्येक भारतीय को स्वदेशी का संकल्प लेना चाहिए ताकि देश में निर्मित और उत्पादित वस्तुओं का ही सभी उपयोग कर सकें। देश में निर्मित सामान और उत्पाद खरीदने से देश की आर्थिक स्थिति निश्चित ही सुदृढ़ होगी। दीपावली में भी समृद्धि का संदेश होता है। और यही संदेश स्वदेशी की मशाल जलाने में उत्प्रेरक का काम करेगा। कृषक जगत के सभी सुधी पाठकों को दीपावली की हार्दिक बधाई, शुभकामानएं।

मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना

हर खेत तक पानी, सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि किसानों की समृद्धि के लिए हर खेत तक पानी पहुँचाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी दिशा में राजगढ़ जिले की मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना क्षेत्र की समृद्धि और किसानों की खुशहाली का आधार बन रही है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना केवल खेतों तक पानी पहुँचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे उद्योगों और पेयजल की उपलब्धता बढ़ी है, नए निवेश आए हैं और रोजगार के अवसर भी पैदा हुए हैं। इसका सीधा लाभ पूरे क्षेत्र के जीवन स्तर में सुधार के रूप में सामने आ रहा है।

'प्रेशराइज्ड पाइप नेटवर्क' पर आधारित विश्व की अनूठी परियोजना

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि यह परियोजना प्रेशराइज्ड पाइप नेटवर्क प्रणाली पर आधारित विश्व की अनूठी सिंचाई परियोजना है। इसमें पानी सीधे भूमिगत पाइप से दबाव के साथ खेतों तक पहुँचता है और ऊँचाई वाले खेतों में भी आसानी से उपलब्ध हो जाता है। SCADA आधारित ऑटोमेशन और सेंसर्स से यह तय होता है कि किस क्षेत्र में कितनी मात्रा में पानी देना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'पर ड्रॉप, मोर क्रॉप' की अवधारणा को इस परियोजना ने पूरी तरह साकार किया है और अब पानी की हर बूंद का सही उपयोग हो रहा है। परियोजना को जल-संसाधन प्रबंधन के लिए भारत सरकार का प्रतिष्ठित 'सीबीआईपी' पुरस्कार भी मिल चुका है।

नेवज नदी पर मोहनपुरा बांध और कालीसिंध नदी पर कुंडालिया बांध बनाकर शुरू की गई इस परियोजना के तहत 26 हजार किलोमीटर लंबी भूमिगत पाइपलाइन बिछाई गई है, जो विश्व में भी एक मिसाल है। पानी को दबाव के साथ पहुँचाने के लिए 20 बड़े पंपिंग स्टेशन बनाए गए हैं। हर आउटलैट से लगभग एक से सवा हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई होती है। पूरी प्रणाली को कंप्यूटर और सेंसर्स से जोड़ा गया है, जिससे कंट्रोल रूम से पानी की आपूर्ति नियंत्रित की जाती है। इस केंद्रीकृत पंपिंग प्रणाली से हर साल लगभग 69 मिलियन यूनिट बिजली की बचत हो रही है।

'सूखा प्रभावित राजगढ़ जिले की किस्मत इस परियोजना ने बदल दी है। यह न सिर्फ मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश और दुनिया के लिए पानी के सर्वोत्तम उपयोग का आदर्श उदाहरण है।'

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

इस परियोजना में 1.5 लाख से अधिक सेंसर और कंट्रोलर लगाए गए हैं, जो सौर ऊर्जा से चलते हैं। पंपिंग स्टेशनों में लगे वैरिएबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव्स मौसम और फसलों की जरूरत के अनुसार पानी का दबाव और मात्रा तय करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अत्यधिक आधुनिक सिंचाई प्रणाली आज पूरे विश्व के लिए पानी के इष्टतम उपयोग का एक अनूठा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सूखाग्रस्त राजगढ़ जिले की किस्मत इस परियोजना ने बदल दी है और यह आधुनिक युग की आवश्यकता भी है, जब पानी की एक-एक बूंद का महत्व बढ़ गया है।

परियोजना की मुख्य विशेषताएँ

- नेवज नदी पर मोहनपुरा बांध और कालीसिंध नदी पर कुंडालिया बांध बने।
- 26 हजार किमी लंबी भूमिगत पाइपलाइन बिछाई गई, जो विश्व में भी एक मिसाल है।
- 20 बड़े पंपिंग स्टेशन से पानी दबाव के साथ खेतों तक पहुंचता है।
- हर आउटलैट से लगभग 1-1.25 हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई होती है।
- केंद्रीकृत पंपिंग सिस्टम से हर साल करीब 69 मिलियन यूनिट बिजली बचती है।
- इसमें 1.5 लाख सेंसर और कंट्रोलर लगे हैं, जो सौर ऊर्जा से चलते हैं।
- आधुनिक तकनीक जैसे Variable Frequency Drives फसलों और मौसम के अनुसार पानी की मात्रा तय करते हैं।

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग

• अनिल कुमार सिंह • सिद्धार्थ नायक
• अक्षता तोमर • ऋचा सिंह
• दिनेश कुमार सिंह • रश्मि शुक्ला
कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर(म.प्र.)
email :aksjnkvv01@gmail.com

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) की क्रियाविधि

आज, दुनिया भर में खपत होने वाले 140 मिलियन टन उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट सामग्री का 90 प्रतिशत डीएपी बनाने में उपयोग किया जाता है। चूँकि कृत्रिम उर्वरक स्थानीय मिट्टी की वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर देते हैं, इसलिए वे वास्तव में कृषि उपज को प्रभावित करते हैं। मिट्टी में डायमोनियम या सिंगल सुपरफॉस्फेट में मौजूद फॉस्फोरस का केवल लगभग 20-25 प्रतिशत ही पौधों द्वारा उपयोग किया जाता है, शेष 75-80 प्रतिशत ऐसे रूपों में परिवर्तित हो जाता है जिनका उपयोग फसलों द्वारा नहीं किया जा सकता। ट्राइकैल्शियम फॉस्फेट, एक जल-अघुलनशील यौगिक, रॉक फॉस्फेट खनिज में फॉस्फोरस का अधिकांश भाग बनाता है। फॉस्फोरस मिट्टी में सबसे आसानी से घुलने वाला पीएच मान 5.5 और 7.0 के बीच होता है। एल्युमिनियम, आयरन और मैंगनीज आयन स्थानीय पीएच मान को 5.5 से ऊपर रखते हैं जबकि मैग्नीशियम और कैल्शियम आयन पीएच मान को 7 से ऊपर रखते हैं और फॉस्फोरस को उसके स्थिर अणु से बाहर निकलने से रोकते हैं। सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पादित कार्बनिक अम्लों के परिणामस्वरूप मिट्टी में मिले रॉक फॉस्फेट धूल से फॉस्फोरस का धीमा विघटन पौधों की जड़ों द्वारा फॉस्फोरस के अवशोषण को बढ़ाता है। जैविक खाद में मौजूद फॉस्फोरस को अन्य तत्व अघुलनशील अवस्था में नहीं रोक पाते। चूँकि यह जल में अघुलनशील होता है, इसलिए फॉस्फेट युक्त जैविक खाद में मौजूद फॉस्फोरस भूजल में रिसता नहीं है या अपवाह में नहीं जाता है। अधिकांश फॉस्फेट चट्टानों का उपयोग फॉस्फेट युक्त जैविक खाद बनाने के लिए किया जा सकता है।

फॉस्फेट युक्त जैविक खाद में फॉस्फेट की मात्रा अधिक होती है क्योंकि यह बारीक पिसे हुए फॉस्फेट रॉक को जैविक खाद के साथ मिलाकर बनाई जाती है। वर्मीकम्पोस्ट, बायोगैस, पौधों के अपशिष्ट (जलकुंभी, कृषि अपशिष्ट और उद्यान अपशिष्ट सहित) और नगर पालिका/सेल्यूलोसिक अपशिष्टों के अवायवीय पाचन से उत्पन्न स्लज, जैविक खाद के सबसे अनुशंसित स्रोत हैं। अवायवीय पाचक स्लरी (अनएरोबिक डायजेस्टर स्लज-एडीएस) का एक अन्य लाभ यह है कि यह एक उपोत्पाद है और इसके लिए अलग से उत्पादन लागत की आवश्यकता नहीं होती है। डायमोनियम फॉस्फेट का एक प्राकृतिक, बेहतर और कम खर्चीला विकल्प फॉस्फोरस-समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का निर्माण है, जिसमें प्रेसमड और डिस्टिलरी अपशिष्ट को रॉक फॉस्फेट के साथ मिलाकर एक मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किया जाता है, जिसे 18 प्रतिशत पी2ओ5 और 22 प्रतिशत आर्द्रता के लिए मानकीकृत किया जाता है।

धान की फसलों पर प्रोम के कृषि संबंधी मूल्यांकन में पाया गया कि प्रोम के प्रयोग से धान के उत्पादन में डीएपी की तुलना में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई। चूँकि किसान प्रोम से परिचित नहीं हैं, जिस कारण अपनी फसलों के लिए पारंपरिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं। यह वास्तव में सभी के लिए एक गंभीर समस्या है, ये उर्वरक मिट्टी के साथ-साथ पर्यावरण, पशु, मनुष्य आदि को भी नुकसान पहुंचाते हैं। खेती में सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी), डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी), मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) आदि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मुक्त रहने वाले लाभदायक सूक्ष्मजीवों की संख्या कम हो जाती है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी फसल के लिए उपयोगी होते हैं। क्योंकि पौधों द्वारा इस उर्वरक की मात्रा का केवल 20-25 प्रतिशत तक ही उपयोग किया जाता है। इन उर्वरकों की शेष मात्रा मिट्टी में जमा हो जाती है और लगातार मिट्टी के पीएच को बढ़ाती है। प्रोम का निर्माण और बिक्री भारत में विभिन्न कृषि उद्योगों द्वारा की जाती है। रॉक फॉस्फेट कण का आकार प्रोम की प्रभावकारिता पर सीधा प्रभाव डालता है। रॉक फॉस्फेट की सूक्ष्मता बढ़ने के साथ प्रोम की प्रभावशीलता भी बढ़ती है। घुलनशील फॉस्फेट के रूप में, रॉक फॉस्फेट अम्लीय और क्षारीय दोनों प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह काम करता है।

पिछले दो दशकों से, जैविक खेती में फॉस्फेट रिच आर्गेनिक मैन्योर (फॉस्फेट युक्त जैविक खाद-प्रोम) का उपयोग शामिल है, जो डीएपी, एमएपी, एसएसपी और नाइट्रोफॉस्फेट जैसे कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। फॉस्फेट युक्त जैविक खाद उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट (32 प्रतिशत पी2ओ5, 2 प्रतिशत कम अथवा अधिक) को बहुत बारीक मात्रा में मिलाकर बनाई जाती है। फॉस्फेट रत्न अयस्क को वर्मीकम्पोस्ट या अवायवीय पाचक अपमार्जक (बायोगैस इकाइयों से निकलने वाली स्लरी) जैसे जैविक खाद की उपस्थिति में बैसिलस मेगाथेरियम, वैरफॉस्फेटिक (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु) के सूक्ष्मजीव संवर्धन का उपयोग करके उपयोगी फॉस्फेट में जैव-रूपांतरित करके फॉस्फेट युक्त जैव उर्वरक तैयार किया जा सकता है। यह एक प्रकार का उर्वरक है जिसका उपयोग सिंगल सुपरफॉस्फेट और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के विकल्प के रूप में किया जाता है। सभी पौधों को फास्फोरस की आवश्यकता होती है, लेकिन चूँकि मिट्टी में फास्फोरस का स्तर कम होता है, यह कृषि के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कृषि उत्पादन के लिए आदर्श व्यापक पादप वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फास्फोरस को मिट्टी में खासकर कूंडों में प्रदान किया जाना चाहिए। इसकी घुलनशीलता मिट्टी के पीएच, आसपास के वातावरण और उसमें मौजूद जीवाणुओं से प्रभावित होती है।

प्रोम के घटक व मात्रा

पौधों के अपशिष्ट,जैविक खाद यथा गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट, अवायवीय पाचक स्लज (एनएरोबिक डायजेस्टर स्लरी- एडीएस) द्वारा प्रोम तैयार करने हेतु इसके विभिन्न घटक तथा उनकी मात्रा निम्नानुसार प्रयोग की जाती है-

- जैविक खाद (गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट, अवायवीय पाचक स्लज - अनएरोबिक डायजेस्टर स्लज-एडीएस) - पांच टन
- उच्च श्रेणी रॉक फॉस्फेट - 200 किलोग्राम
- फॉस्फेट घुलनशील सूक्ष्मजीव (बैसिलस प्रजाति) -1.5-2 किलोग्राम

4. नाइट्रोजन स्थिरीकरण सूक्ष्मजीव (एजोटोबैक्टर) -1.5-2 किलोग्राम

- सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे तांबा, जस्ता और बोरॉन आदि (माइक्रोन्यूट्रिएंट मिश्रण) - 500 ग्राम

उक्त समस्त घटकों के मिश्रण को एक गड्ढे में 90 दिनों तक अपघटन हेतु रखा जाता है। उक्त अवधि के पश्चात् लगभग 3.0 टन परिपक्व प्रोम प्राप्त होता है जिसमें लगभग 30-35 किग्रा नाइट्रोजन एवं 60-65 किग्रा पी2ओ5 की उपलब्धता होती है। इसके अतिरिक्त इसमें पोटैशियम, गंधक तथा आवश्यक सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता होती है।

(क्रमशः)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : कृषि में उपयोग

• डॉ. अदिति गुप्ता
कृषि विज्ञान केंद्र, चाँदगोठी, चुरू
aditigupta.fn@gmail.com

दुनियाभर में बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से कृषि उपज को बढ़ाने की दिशा में नयी-नयी तकनीकों का उपयोग हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र के एक अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी में दो अरब लोगों की वृद्धि होगी, जिनके पोषण के लिए खाद्य उत्पादकता में करीब 60 फीसद तक की वृद्धि की जरूरत पड़ेगी। एआई और एमएल (मशीन लर्निंग) की मदद से इन जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। दरअसल, एआई, मशीन लर्निंग (एमएल) और आईओटी सेंसर अल्गोरिदम के लिए रियल-टाइम डाटा प्रदान करते हैं। इससे न सिर्फ कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में मदद मिलती है, बल्कि इससे फसल उत्पादन की लागत को भी कम किया जा सकता है। मौसम, धूप, पशु, पक्षी, कीड़ों के प्रवासी पैटर्न, उर्वरकों व कीटनाशकों का उपयोग, सिंचाई चक्र ये सभी उपज को कैसे प्रभावित करते हैं, इनके बारे में सटीक जानकारी AI की मदद से हासिल की जा सकती है।

कृषि में AI का उपयोग करने वाले एप्लिकेशन और समाधान किसानों को जल प्रबंधन, फसल चक्र, समय पर कटाई, उगाई जाने वाली फसल का प्रकार, इष्टतम रोपण, कीट हमले और पोषण प्रबंधन पर सही सलाह देकर सटीक और विनियमित खेती में सहायता करने के लिए बनाए गए हैं।

AI-सक्षम सिस्टम मौसम की भविष्यवाणी करते हैं, कृषि स्थिरता की निगरानी करते हैं, और उपग्रहों और ड्रोन द्वारा ली गई तस्वीरों के साथ तापमान, वर्षा, हवा की गति और सूर्य विकिरण जैसे डेटा का उपयोग करके बीमारियों या कीटों और कुपोषित पौधों की उपस्थिति के लिए खेतों का आकलन करते हैं।

एसएमएस-सक्षम फोन और बुवाई ऐप जैसे बुनियादी उपकरणों के साथ, बिना कनेक्टिविटी वाले किसान तुरंत एआई से लाभ उठा सकते हैं। वाई-फाई कनेक्टिविटी वाले किसान इस बीच अपने खेतों के लिए लगातार एआई-अनुकूलित योजना प्राप्त करने के लिए एआई ऐप का उपयोग कर सकते हैं। किसान एसएमएस और एआई-संचालित तकनीकों की मदद से उत्पादन और राजस्व को जिम्मेदारी से बढ़ाते हुए और अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को कम किए बिना खाद्यान्न की बढ़ती मांग को पूरा कर सकते हैं। जलवायु चर में गर्मी, वर्षा, हवा और सौर विकिरण शामिल हैं। ऐसे कई संभावित क्षेत्र हैं जिनमें AI किसानों की मदद कर सकता है जैसेः सरकार ने किसानों की सहायता के लिए कृषि क्षेत्र में विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का इस्तेमाल किया है। कुछ पहल नीचे दी गई हैंः

AI का उपयोग करके मौसम का पूर्वानुमानः किसानों को जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण के कारण बीज बोने का सबसे अच्छा समय निर्धारित करना चुनौतीपूर्ण लगता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से, किसान मौसम पूर्वानुमान का उपयोग करके मौसम की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं, जो उन्हें उगाई जाने वाली फसल के प्रकार और बीज कब बोए जाने चाहिए, इसकी योजना बनाने में मदद करता है। विभिन्न एआई और मशीन लर्निंग टूल्स के जरिए कीटों के हमलों आदि को लेकर भी अलर्ट प्राप्त किया जा सकता है। एआई की सहायता से किसान वास्तविक समय में कई तरह के डाटा, जैसे-मौसम की स्थिति, पानी के उपयोग, मिट्टी की स्थिति, तापमान आदि का विश्लेषण करके समस्याओं की पहचान कर सकते हैं। इससे समय पर सही निर्णय लेने में आसानी होगी। फसल एग्रीटेक कंपनी किसानों का लाभ बढ़ाने के साथ सटीक अनुमान लगाने में मदद करती है। कंपनी ने कृषि डाटा की निगरानी के लिए एप विकसित किया है। इसके अलावा, इसने फसल सेंस नामक आईओटी डिवाइस बनाया है, जो खेत की निगरानी और डाटा एकत्र करता है।

AI रोबोटिक्सः AI के आधार पर ऐसे रोबोट विकसित किए जा रहे हैं जो खेती के खेतों में कई तरह की गतिविधियाँ आसानी से कर सकते हैं। लोगों की तुलना में, इन रोबोट को खरपतवारों को नियंत्रित करते हुए अधिक तेजी से और अधिक मात्रा में फसल काटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन रोबोटों को फसलों की कटाई और पैकिंग करना सिखाया जाता है, साथ ही फसलों की गुणवत्ता का निरीक्षण करना और खरपतवारों की तलाश करना भी सिखाया जाता है। ये रोबोट कृषि मजदूरों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों को भी दूर कर सकते हैं।

भारतीय एग्रीटेक कर रहे किसानों की मददः भारत में किसानों और उनके परिवारों की आजीविका कृषि की सफलता पर निर्भर करती है। भारत में कृषि तकनीक स्टार्टअप, जैसे-क्रापइन, देहात, फसल, बीजक जैसी कंपनियां बेहतर पैदावार के लिए तकनीकी सुविधाएं मुहैया करा रही हैं। ये स्टार्टअप देश में खेती करने का तरीका बदल रहे हैं।

क्रापइनः इस एग्रीटेक के फाउंडर ने मौसम विश्लेषण तैयार करने के लिए स्मार्टफार्म फोन एप्लीकेशन विकसित किया है। कंपनी एप का उपयोग करने वाले किसानों को सटीक डाटा प्रदान करने के लिए एआई और इंटरनेट आफ थिंग्स का उपयोग करती है। कंपनी ने करीब 40 लाख किसानों की मदद की है।

देहातः यह किसानों के लिए ऑनलाइन कम्युनिटी प्रदान करता है। मौसम पूर्वानुमान की रिपोर्ट, डेली क्राप रिमाइंडर, फसल, कीट, मिट्टी और बीज को लेकर सलाह जैसी कई अन्य कृषि सेवाएं प्रदान करता है। जिन किसानों के पास स्मार्टफोन नहीं हैं, उनके लिए दैनिक हेल्पलाइन की सुविधा प्रदान करता है। इस स्टार्टअप ने भारत में लाखों किसानों की मदद की है।

पशुधन के स्वास्थ्य की निगरानी पशुधन में स्वास्थ्य समस्याओं का पता लगाना फसलों की तुलना में आसान लग सकता है, वास्तव में, यह विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है। खेती के लिए AI इसमें मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, CattleEye नामक एक कंपनी ने एक समाधान विकसित किया है जो मवेशियों के स्वास्थ्य की दूर से निगरानी करने के लिए ड्रोन, कैमरों के साथ-साथ कंप्यूटर विजन का उपयोग करता है। यह असामान्य मवेशियों के व्यवहार का पता लगाता है और प्रसव जैसी गतिविधियों की पहचान करता है।

CattleEye पशुधन पर पर्यावरणीय परिस्थितियों के साथ-साथ आहार के प्रभाव को निर्धारित करने और मूल्यवान जानकारी प्रदान करने के लिए AI और ML समाधानों का उपयोग करता है। यह ज्ञान किसानों को दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए मवेशियों की भलाई में सुधार करने में मदद कर सकता है।

किसान ई-मित्र एक एआई-संचालित चौटबॉट है, यह पीएम किसान सम्मान निधि योजना के बारे में प्रश्नों के उत्तर देने में किसानों की सहायता के लिए विकसित किया गया है। यह समाधान कई भाषाओं का समर्थन करता है और अन्य सरकारी कार्यक्रमों में सहायता के लिए विकसित हो रहा है।

जलवायु परिवर्तन के कारण उपज के नुकसान से निपटने के लिए राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली फसल में कीट संक्रमण का पता लगाने के लिए एआई और मशीन लर्निंग का उपयोग करती है। इससे स्वस्थ फसलों के लिए समय पर हस्तक्षेप संभव हो पाता। उपग्रह, मौसम और मिट्टी की नमी डेटासेट का उपयोग करके चावल और गेहूं की फसल का स्वास्थ्य आकलन और फसल स्वास्थ्य निगरानी की जाती है। इसमें फील्ड फोटो का उपयोग करके एआई आधारित विश्लेषण किया जाता है

भविष्य में, AI किसानों को कृषि प्रौद्योगिकीविदों के रूप में विकसित होने में मदद करेगा, जो पौधों की प्रत्येक पंक्ति तक उपज को अनुकूलित करने के लिए डेटा का उपयोग करेंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कृषि मशीनों और रोबोटों को शक्तिशाली नई क्षमताएँ प्रदान कर सकती है। AI तकनीकें मैन्युअल श्रम की आवश्यकता को कम करने और कुछ कृषि कार्यों जैसे कि रोपण, निराई, सिंचाई, कीट नियंत्रण और कटाई को स्वचालित करके खेतों पर दक्षता बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।

मिट्टी और फसल स्वास्थ्य निगरानी प्रणाली

मिट्टी के प्रकार और मिट्टी के पोषण का उगाई जाने वाली फसलों और उनकी गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वनों की कटाई बढ़ने के कारण मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो रही है, जिससे इसका आकलन करना मुश्किल हो रहा है। एआई, मशीन लर्निंग, इन-ग्राउंड सेंसर, इंफ्रारेड इमेजरी और रियल-टाइम वीडियो एनालिटिक्स पैदावार में सुधार कर सकते हैं। फसलों की गुणवत्ता में मिट्टी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। हालांकि उर्वरकों के अतिशय प्रयोग और वनों की कटाई में वृद्धि के कारण मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। ऐसे में मिट्टी की उर्वरता का निर्धारण करना कठिन है। एक जर्मन-आधारित टेक स्टार्टअप पीईएटी ने प्लांटिक्स नामक एआई आधारित एप्लीकेशन विकसित किया है, जो कीटों, बीमारियों सहित मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी की पहचान कर सकता है, जिससे किसानों को उसके हिसाब से उर्वरक का उपयोग करके फसल की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिल सकती है। स्काईस्क्रेल टेक्नोलाजीज फसल स्वास्थ्य की निगरानी के लिए ड्रोन आधारित एरियल इमेजिंग समाधान लेकर आया है। इस तकनीक में ड्रोन खेतों से डाटा कैप्चर करता है और फिर कंपनी डाटा को यूएसबी ड्राइव के माध्यम से ड्रोन से कंप्यूटर में ट्रांसफर किया जाता है। कैप्चर की गई इमेज का विश्लेषण करने के लिए अल्गोरिदम का उपयोग करती है और विस्तृत रिपोर्ट प्रदान करती है। यह किसानों को कीटों और जीवाणुओं की पहचान करने में मदद करता है। भारत में भी उद्योगों ने एआई संचालित फसल उपज भविष्यवाणी माडल विकसित करने के लिए सरकार के साथ हाथ मिलाया है। यह प्रणाली फसल उत्पादकता बढ़ाने, कीट या बीमारी के प्रकोप की चेतावनी देने के लिए एआई आधारित तकनीक का इस्तेमाल करती है। किसानों को सटीक जानकारी देने के लिए इसरो द्वारा उपलब्ध कराए गए रिमोट सेंसिंग डाटा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के डाटा, भारत मौसम विज्ञान विभाग के मौसम की भविष्यवाणी, मिट्टी की नमी और तापमान का विश्लेषण आदि का उपयोग करती है।

AI से कीटों का पता लगाना

कृषि को नुकसान पहुँचाने वाले किसानों के सबसे घातक दुश्मनों में से एक कीट हैं। AI सिस्टम यह निर्धारित करने के लिए उपग्रह फोटो और ऐतिहासिक डेटा का उपयोग करते हैं कि क्या कोई कीट उतरा है और यदि हाँ, तो कौन सी प्रजातियाँ - जैसे कि टिड्डे, टिड्डे और अन्य - उतरी हैं। AI किसानों को उनके सेल फोन पर अलर्ट भेजकर कीटों के खिलाफ उनकी लड़ाई में सहायता करता है ताकि किसान आवश्यक सावधानी बरतें।

ड्रोन से फसल स्वास्थ्य निगरानी

ड्रोन तकनीक ने भारत के कृषि क्षेत्र की उत्पादकता पर स्थायी प्रभाव डाला है। इक्रिनॉक्स ड्रोन जैसी कंपनियाँ किसानों को विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए ड्रोन-संचालित समाधान प्रदान करती हैं, जिसमें सटीक खेती, पशुधन प्रबंधन, कीटनाशक अनुप्रयोग, फसल तनाव पहचान, उपचार योजना, पौधों की वृद्धि निगरानी और स्काउटिंग शामिल हैं।

पर्वों का महापर्व दीपावली

दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व श्रीगणेश को क्यों पूजते हैं?– दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व गणपति की पूजा भी की जाती है। इसके पीछे लाइफ मैनेजमेंट से जुड़े कई खास सूत्र छिपे हैं। लक्ष्मी धन की देवी हैं, सरस्वती ज्ञान की तथा गणपति बुद्धि के देवता हैं।

दीपावली पर क्यों खाते हैं खील-बताशे?– दीपावली धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति का त्योहार है। इस दिन मां लक्ष्मी का पूजन कर जीवनभर धन-संपत्ति की कामना की जाती है। खील-बताशे का प्रसाद किसी एक कारण से नहीं बल्कि उसके कई महत्व है, व्यवहारिक, दार्शनिक, और ज्योतिषीय ऐसे सभी कारणों से दीपावली पर खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

दीपावली पर क्यों करते हैं दीपदान?– धनतेरस से दीपावली तक नदी-तालाबों में दीपदान करने का प्रचलन है। शास्त्रों का मानना है कि दीपदान करने से नरक के दर्शन नहीं होते। दीपदान में लाइफ मैनेजमेंट के सूत्र भी छिपे हैं। दरअसल दीपदान इस बात का संकेत है कि हम अपने जीवन में ज्ञान और धर्म का उजाला लाएंगे। अज्ञान और अधर्म के कारण ही व्यक्ति को नर्क के दर्शन होते हैं यानी मरने के बाद नर्क में जाना पड़ता है। अज्ञानता के कारण हम अच्छे-बुरे का भेद नहीं कर पाते, परमात्मा को नहीं पहचान पाते। ज्ञान आने पर यह परेशानी दूर हो जाती है। ज्ञान आता है तो उसके साथ ही धर्म भी हमारे जीवन में प्रवेश करता है।

क्यों भगवान विष्णु के पैरों की ओर बैठती हैं माता लक्ष्मी?– हम सभी ने भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के कई चित्र देखें हैं। अनेक चित्रों में भगवान विष्णु को बीच समुद्र में शेषनाग के ऊपर लेटे और माता लक्ष्मी को उनके चरण दबाते हुए दिखाया जाता है। माता लक्ष्मी यूं तो धन की देवी हैं तो भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही निवास करती हैं ऐसा क्यों? इसका कारण हैं कि भगवान विष्णु कर्म व पुरुषार्थ का प्रतीक हैं और माता लक्ष्मी उन्हीं के यहां निवास करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटते और कर्म व अपने पुरुषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करते हैं जैसे कि भगवान विष्णु।

कमल के फूल पर ही क्यों बैठती हैं माता लक्ष्मी? – महालक्ष्मी के चित्रों और प्रतिमाओं में उन्हें कमल के पुष्प पर विराजित दर्शाया गया है। इसके पीछे धार्मिक कारण तो है साथ ही कमल के पुष्प पर विराजित लक्ष्मी जीवन प्रबंधन का महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं। महालक्ष्मी धन की देवी हैं। धन के संबंध में कहा जाता है कि इसका नशा सबसे अधिक दुष्प्रभाव देने वाला होता है। धन मोह-माया में डालने वाला है और जब धन किसी व्यक्ति पर हावी हो जाता है तो अधिकांश परिस्थितियों में वह व्यक्ति बुराई के रास्ते पर चल देता है। इसके जाल में फंसने वाले व्यक्ति का पतन होना निश्चित है।

वहीं कमल का फूल अपनी सुंदरता, निर्मलता और गुणों के लिए जाना जाता है।

कमल कीचड़ में ही खिलता है परंतु वह उस की गंदगी से परे है, उस पर गंदगी हावी नहीं हो पाती। कमल पर विराजित लक्ष्मी यही संदेश देती हैं कि वे उसी व्यक्ति पर कृपा बरसाती हैं जो कीचड़ जैसे बुरे समाज में भी कमल की तरह निष्पाप रहे और खुद पर बुराइयों को हावी ना होने दें। जिस व्यक्ति के पास अधिक धन है उसे कमल के फूल की तरह अधार्मिक कृत्यों से दूरी बनाए रखना चाहिए। साथ ही कमल पर स्वयं लक्ष्मी के विराजित होने के बाद भी उसे घमंड नहीं होता, वह सहज ही रहता है। इसी तरह धनवान व्यक्ति को भी सहज रहना चाहिए, जिससे उस पर लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहे।

दीपक का इतिहास

ज्योति अग्नि और उजाले का प्रतीक दीपक कितना पुरातन है इसके विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। गुफाओं में भी यह मनुष्य के साथ था। कुछ बड़ी अंधेरी गुफाओं में इतनी सुन्दर चित्रकारी मिलती है जिसे बिना दीपक के बनाना सम्भव नहीं था। भारत में दिये का इतिहास प्रामाणिक रूप से 5000 वर्षों से भी ज्यादा पुराना हैं जब इसे मुअन-जो-दडो में ईंटों के घरों में जलाया जाता था। खुदाइयों में वहाँ मिट्टी के पके दीपक मिले है। कमरों में दियों के लिये आले या ताक़ बनाए गए हैं, लटकाए जाने वाले दीप मिले हैं और आवागमन की सुविधा के लिए सड़क के दोनों ओर के घरों तथा भवनों के बड़े द्वार पर दीप योजना भी मिली है। इन द्वारों में दीपों को रखने के लिए कमानदार नक्काशीवाले आलों का निर्माण किया गया था।

दीपक भारतीय संस्कृति और जीवन में इस प्रकार मिला-जुला है कि इसके नाम पर भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक राग का नाम दीपक राग - रखा गया है। कहते हैं इसके गाने से दीपक अपने आप जलने लगते हैं।

भारत सरकार
केन्द्रीय कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान
ट्रैक्टर नगर, बुदनी, जिला–सीहोर (म.प्र.) 466 445
कृषि मशीनरी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम; (वर्ष 2025–26)
आगामी माहों में निम्नलिखित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया जाना प्रस्तावित है

पाठ्यक्रम का नाम	कोड	अवधि	प्रारंभ की तिथि	समाप्ति की तिथि	आकस्मिक शुल्क	पात्रता
उपयोगकर्ता स्तर पाठ्यक्रम						
कृषि में ऊर्जा प्रबंधन के लिये उपयुक्त मशीनीकरण तकनीक	U-1	4 सप्ताह	17.11.2025	12.12.2025	नि:शुल्क	प्रगतिशील कृषक जो मशीनीकृत खेती के इच्छुक हों, ट्रैक्टर एवं कृषि मशीनरी के मालिक/प्रचालक/केन्द्र एवं राज्य सरकार के नामित अधिकारी/कर्मचारी, प्रचार–प्रसार कार्यकर्ता एवं निजी संस्थान के कर्मचारी, जो कृषि मशीनरी क्षेत्र में संलग्न हों।
उन्नत कृषि मशीनरी का चयन, प्रचालन, सुरक्षा व रखरखाव	U-2	6 सप्ताह	03.11.2025 02.02.2026	12.12.2025 13.03.2026		
महिला कृषकों के लिए उपयुक्त सहयोगी उपकरण	U-5	3 दिन	आवश्यकतानुसार			
जल संरक्षण उपकरण एवं सूक्ष्म सिंचाई द्वारा जल प्रबन्धन	U-7	1 सप्ताह	05.01.2026			
पौध संरक्षण उपकरण का चयन, प्रचालन एवं रखरखाव	U-8	1 सप्ताह	12.01.2026	16.01.2026		
उन्नत कटाई एवं गहाई उपकरणों का चयन, प्रचालन एवं रखरखाव	U-9	2 सप्ताह	24.11.2025 23.03.2026	05.12.2025 03.04.2026		
शुष्क खेती के लिए कृषि यंत्रों का चयन, प्रचालन और रखरखाव	U-11	2 सप्ताह	15.09.2025	26.09.2025		
फसल आधारित कृषि मशीनरी	U-12	1 सप्ताह	आवश्यकतानुसार			
कौशल विकास पाठ्यक्रम						
ट्रैक्टर प्रचालक	AGR/ Q1115	210 घंटे	एएससीआई अनुमोदन के अनुसार समाचार पत्रों एवं संस्थान की वेबसाइट पर विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा		नि:शुल्क	दसवीं कक्षा उत्तीर्ण
हार्वेस्टिंग मशीन प्रचालक	AGR/ Q1116	210 घंटे				दसवीं कक्षा उत्तीर्ण
तकनीशियन स्तर पाठ्यक्रम						
स्टेशनरी इंजिनों एवं ट्रैक्टरों की मरम्मत व ओवरहालिंग	T-1	6 सप्ताह	27.10.2025 15.12.2025 27.01.2026	05.12.2025 23.01.2026 06.03.2026	रु. 300	ऐसे आवेदक जो ट्रैक्टर मेकेनिक, फार्म मैकेनिक, मैकेनिक एग्रीकल्वरल मशीनरी, डीजल मेकेनिक, मोटर मैकेनिक, इलेक्ट्रिशियन या अन्य समकक्ष विषयो पर आई.टी.आई सर्टिफिकेट परीक्षा पास कर चुके हों/उन्नत कृषि मशीनरी का चयन, प्रचालन, सुरक्षा व रखरखाव पाठ्यक्रम/उपर्युक्त विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त हो या केन्द्र/राज्य/निजी संस्थाओं/गैर सरकारी संगठन में कार्यरत् संबंधित विषयों के अधिकारी/कर्मचारी ।
कृषि मशीनों के हाइड्रॉलिक सिस्टम का अध्ययन व मरम्मत	T-4	4 सप्ताह	08.12.2025 27.01.2026 09.03.2026	03.01.2025 20.02.2026 03.04.2026	रु. 200	
ऑटो इलेक्ट्रिकल उपकरण का रखरखाव एवं मरम्मत तथा बैटरी रि–कंडीशनिंग	T-5	3 सप्ताह	02.03.2026	20.03.2026	रु. 150	
डीजल पम्पिंग सेट का स्थापन, मरम्मत व ओवरहालिंग	T-8	2 सप्ताह	आवश्यकतानुसार		रु. 100	
कम्बाइन हार्वेस्टर एवं भूसा–मशीन का स्थापन, रखरखाव एवं मरम्मत	T-9	3 सप्ताह	03.11.2025	21.11.2025	रु. 150	
शैक्षणिक स्तर पाठ्यक्रम						
डिग्री /डिप्लोमा स्तर के अभियान्त्रिकी छात्रों के लिए फार्म पावर एवं मशीनरी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	A -1	4 सप्ताह	05.01.2026	30.01.2026	रु. 2000	विभिन्न कालेजों के कृषि एवं यांत्रिकी इंजीनियरिंग,स्नातक/डिप्लोमा /आई.टीआई./वोकेशनल व्यवसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत नामित विद्यार्थियों के लिए। (उपरोक्त पाठ्यक्रम हेतु आवेदन संस्था द्वारा प्राप्त होने पर ही विचार किया जायेगा व्यक्तिगत आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा) ।
औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों एवं व्यावसायिंक प्रशिक्षण संस्थानों के छात्रों के लिए फार्म पावर एवं मशीनरी पर व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम	A -2					
प्रबन्धन स्तर पाठ्यक्रम कृषि मशीनरी प्रबन्धन	M -2	1 सप्ताह	आवश्यकतानुसार		रु. 2500	प्रगतिशील कृषक/ट्रैक्टर एवं कृषि मशीनरी निर्माताओं/शासकीय विभागों/ गैर सरकारी संगठन द्वारा नामित इंजीनियर/प्रबंधकों कर्मचारियों / कृषकों के लिए ।
आवश्यकता पर आधारित पाठ्यक्रम	NB	–	आवश्यकतानुसार		रु. 250 प्रति सप्ताह (कृषकों हेतु नि:शुल्क)	
प्रशिक्षु प्रशिक्षण: https://nats.education.gov.in (For Degree pass out)	Graduate Apprentice	1 वर्ष	नियमानुसार प्रतिमाह प्रशिक्षण वृत्तिका			कृषि इंजीनियरिंग स्नातक उत्तीर्ण **(दिये गये बेवसाइट पर पंजीकरण करें)**।
प्रशिक्षु प्रशिक्षण: www.apprenticeshipindia.gov.in (For ITI pass out)	Trade Apprentice	1 वर्ष	नियमानुसार प्रतिमाह प्रशिक्षण वृत्तिका			ट्रैक्टर/ डीजल/ इलेक्ट्रीशियन/ कोपा में आई. टी. आई. उत्तीर्ण **(दिये गये बेवसाइट पर पंजीकरण करें)**।

आवेदन कैसे करें–आवेदक अपना विस्तृत विवरण,यथा 1.नाम, 2.पिता का नाम, 3.जन्म तिथि, 4.वर्ग 5.पत्र व्यवहार का पता, 6.प्रशिक्षण का उद्देश्य 7.शैक्षणिक योग्यता व तकनीकी योग्यता, 8. कृषि भूमि(एकड़/हेक्टर) 9.कृषि मशीनों को चलाने का अनुभव, इत्यादि विवरण सादे कागज पर दे सकते हैं और शैक्षणिक/ तकनीकी योग्यता, कृषि एवं तकनीकी क्षेत्र में अनुभव, रोजगार (नौकरी) इत्यादि से संबंधित सभी महत्वपूर्ण कागजातों की फोटो प्रतिलिपियों के साथ, संस्थान के निदेशक को वर्ष में कभी भी और या पाठ्यक्रम प्रारंभ होने के एक माह पूर्व तक, अपने आवेदन भेज सकते हैं। यदि चाहें तो निर्धारित आवेदन प्रपत्र व्यक्तिगत तौर पर प्राप्त कर सकते हैं। ई–मेल के द्वारा भी आवेदन किया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं आवेदन–पत्र संस्थान की वेबसाइट से भी डाऊनलोड किये जा सकते हैं । पर्याप्त संख्या में आवेदन प्राप्त न होने पर किसी भी पाठ्यक्रम को निरस्त किया जा सकता है।

सुविधाएं–उपयोगकर्ता स्तर पाठ्यक्रम एवं कौशल विकास पाठ्यक्रम में, नामित कर्मचारियों को छोड़कर, प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को प्रति दिन रूपये **250/–**प्रशिक्षण वृत्तिका दी जाती है एवं प्रशिक्षणार्थी के निवास से कम से कम दूरी का आने एवं वापस जाने का न्यूनतम श्रेणी का किराया (मूल टिकिट जमा करने पर) भुगतान किया जाता है। सभी पाठ्यक्रम के सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए संस्थान में वास्तविक दरों पर भोजन व्यवस्था एवं ठहरने के लिए निःशुल्क छात्रावास उपलब्ध है। उपयोगकर्ता स्तर पाठ्यक्रम एवं कौशल विकास पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण वृत्तिका देने का प्रावधान नहीं है तथा आने–जाने का किराया भी संस्थान द्वारा प्रदान नहीं किया जाएगा। प्रशिक्षु प्रशिक्षणार्थियों को नियमानुसार प्रतिमाह प्रशिक्षण वृत्तिका प्रदान की जाती है।

उम्र –सभी पाठ्यक्रमों के लिए आवेदक की आयु 18 से 40 वर्ष के मध्य होना चाहिए (नामित उम्मीदवारों को छोड़कर) और उनको हिन्दी या अँग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है ।

संस्थान का पता, : जहां आवेदन भेजे जा सकते हैं / सम्पर्क किया जा सकता है। **अधिक जानकारी के लिए संस्थान के वेबसाइट और फेसबुक पेज से जुड़े रहें।**

निदेशक केन्द्रीय कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान, ट्रैक्टर नगर, बुदनी, जिला–सीहोर (म.प्र.) 466445

E-mail : fmti-mp@nic.in Website: http://fmttibudni.gov.in	**प्रशिक्षण कार्यलय:** 07564-299004 07564-299002	**निदेशक कार्यालय – 07564–299003**

प्रकाश पर्व दीपावली

पर्व उत्साह के कारक होते हैं। इनकी महत्ता सर्वव्यापी है। भारत में वर्ष के दिनों से अधिक पर्व की संख्या है। भौतिक साधन के अभाव के पश्चात देश के प्रत्येक जन में अपार जोश का मुख्य स्रोत त्यौहार ही हैं। उत्सव में दीपावली का प्रमुख स्थान है। महालक्ष्मी की कृपा के अभाव में किसी भी भौतिकी कार्य अथवा सांसारिक कार्य का होना असंभव है। इस प्रधान आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस पर्व को साधना व उत्साह से संपन्न करने की अपेक्षा सदैव जन मन में रहती है। इस पर्व को प्रकाश पर्व कहने का तात्पर्य भी यही है कि संपन्नता की रोशनी में ही श्रेष्ठ जीवन की संभावना है।

इस अवसर पर निवेश, हिसाब-किताब (बही), यम (पाप कार्य का स्मरण), कुबेर, (बचत व भंडारण), संपत्ति, पूँजी, पर्यावरण-प्रकृति पूजन व संबंधों की महत्ता से बद्ध पंच पर्व मनाए जाते हैं। इन सभी की प्रचुरता या उपलब्धता के उपरांत ही मानवीय जीवन की सफलता निश्चित होना है।

इस उत्सव को शास्त्रोक्त प्रकार से मनाने की नियम व पद्धति सभी धर्म ग्रंथों में उपलब्ध है। दीपावली का शाब्दिक अर्थ दीपों की पंक्ति या समूह है। उस दिन लोग बड़े उत्साह व उमंग के साथ घर, दुकान, गली, रास्ते, मकान, भवन आदि की सफाई कर सायंकाल सैकड़ों-हजारों दीप जलाकर सजावट करते हैं। इसीलिए यह त्योहार दीपावली के नाम से जाना जाता है। यों तो लोग दीपक प्रतिदिन घर, दुकान, देवालय और पूजन काल में जलाते हैं। किंतु वह दीपावली नहीं कहलाता। अतः दीपावली कोई विशेष उद्देश्य को लेकर है। यह उद्देश्य जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है। युगों से चली आ रही पारंपरिक पर्वों के लिए कोई न कोई शास्त्रीय या पारंपरिक व्यवस्था ही आधार मानी जाती है। दीपावली प्रायः दोनों सिद्धांतों का आधार है। प्रथम यद्यपि भगवान ने गीता में कहा है कि महीनों में मार्गशीर्ष मैं ही हूँ। फिर भी उन्हीं भगवान के वचनानुसार बारह महीनों में कार्तिक मास धार्मिक दृष्टि से उत्कृष्टतम माना गया है। चातुर्मास्य जो भगवान का विश्राम या शयन समय माना जाता है, उसका अंत कार्तिक में ही होता है और देवोत्थान एकादशी को भगवान का जागरण दिन माना जाता है। इस महीने में धर्मनिष्ठ लोग गंगा, काशी, प्रयाग, हरिद्वार में गंगातट पर महीने भर निवास कर पवित्र स्नान का लाभ उठाते हुए अपने मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दीपावली अमावस्या को ही मनाई जाती है। उसका भी कुछ विशेष तर्क है। सूर्य चंद्रमसौ सह परः सन्निकर्ष अमावस्या। सूर्य और चंद्रमा दोनों अत्यंत सन्निधि में जिस दिन आते हैं, वह अमावस्या तिथि है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से चंद्रमा की कला क्रमशः क्षीण होती हुई अमावस्या को सूर्य और चंद्र दोनों अत्यंत समीप होने से चंद्रमा कलाहीन होकर पुनः सूर्य से पृथक होता हुआ नवीन कला को धारण करता है। इसी अमावस्या से चंद्रमा की नवीन किरणें प्राप्त होती हैं। अतः अमावस्या को अंधकार का अंत और प्रकाश का प्रारंभ दोनों का प्रतीक कहा जा सकता है।

शास्त्रीय और लौकिक उपाख्यान है कि भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका पर विजय प्राप्त कर जब अयोध्या आए तो खुशी में लोगों ने घर-घर, गलियों और मार्गों पर दीपक जलाकर विजयोल्लास का प्रदर्शन किया था।

पूर्व में राजाओं के यहाँ शारदीय पूर्णिमा को प्रदोष काल में लक्ष्मी पूजन किया जाता था। राजा लोग रात्रिभर पाशा खेलते थे। और रात्रि जागरण करते थे। उस रात्रि को कोजागरा भी कहते हैं। शास्त्रों में कोजागरा प्रदोषे लक्ष्मी पूजन का भी उल्लेख है। दीपावली की लक्ष्मी पूजा प्रारंभ में वणिक्वृत्ति वालों की थी किंतु धीरे-धीरे सभी ने दीपावली को ही लक्ष्मी पूजन करना प्रारंभ किया। आज सारा समाज ही दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन बड़े उत्साह के साथ करता है। यों तो गरीब से अमीर तक सबके सब दीपक जलाकर उत्साह मनाते हैं, लक्ष्मी पूजन करते हैं, धनवानों, सेठ-साहूकारों के महलों और दुकानों की सजावट निराली रहती है। लक्ष्मी माता मानों साक्षात विराजमान होकर उस अनोखी छटा को चार चाँद लगा देती है। लक्ष्मी पूजन के बाद एक-दूसरे का प्रेम मिलन, मिठाई वितरण आदि प्रक्रिया लोगों में आपसी सौहार्द्र तथा नए जीवन का संचार कर देती है। दीपावली त्यौहार की शुरुआत व समापन की अवधि 5 दिनों की होती है। पर्व की शुरुआत धनतेरस से होती है और भ्रातृ द्वितीया को उनका समापन होता है।

धनतेरस की महत्ता

कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस कहते हैं। धनतेरस के दिन घर के द्वार पर एक दीपक जलाकर रखा जाता है। यह त्योहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। धनतेरस के दिन मृत्यु के देवता यमराज और भगवान धनवंतरी की पूजा का महत्व है।

क्यों मनाया जाता है धनतेरस का त्यौहार- भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य का स्थान धन से ऊपर माना जाता रहा है। यह कहावत आज भी प्रचलित है कि पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया इसलिए दीपावली में सबसे पहले धनतेरस को महत्व दिया जाता है। जो भारतीय संस्कृति के हिसाब से बिल्कुल अनुकूल है। शास्त्रों में वर्णित कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन भगवान धनवंतरी अपने हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए।

मान्यता है कि भगवान धनवंतरी विष्णु के अंशावतार हैं। संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए ही भगवान विष्णु ने धनवंतरी का अवतार लिया था। भगवान धनवंतरी के प्रकट होने के उपलक्ष्य में ही धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है।

क्या खास करें इस दिन- इस दिन अपने सामर्थ अनुसार किसी भी रूप में चांदी एवं अन्य धातु खरीदना अति शुभ है। धन संपत्ति की प्राप्ति हेतु कुबेर देवता के लिए घर के पूजा स्थल पर दीप दान करें एवं मृत्यु देवता यमराज के लिए मुख्य द्वार पर भी दीप दान करें।

इस दिन अपने घर की सफाई अवश्य करें। रूप और सौंदर्य प्राप्ति हेतु इस दिन शरीर पर उबटन लगाकर स्नान करें। अंजली पुत्र बजरंगबलि हनुमान का जन्म कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में हुआ था इसलिए हनुमान जयंती भी इसी दिन मनाई जाती है। ऐसे में सायं काल उनका पूजन एवं सुंदर कांड का पाठ अवश्य करें ।

माता लक्ष्मी

अनेक पौराणिक ग्रंथों में देवी लक्ष्मी के संदर्भ में वर्णन किया गया है। जानिए किस ग्रंथ में देवी लक्ष्मी के बारे में क्या कहा गया है-

- महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास लिखते हैं- पुरुषां धनं वधः अर्थात् लक्ष्मी का अभाव तो मनुष्य के लिए मृत्यु का चिह्न है। यदि मनुष्य पर लक्ष्मी की कृपा न हो तो इच्छाएं अधूरी रह जाने पर उसकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती।
- ऋग्वेद के श्री सूक्त में भी भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना की गई है- हे देवी, मैं आपका वरण करता हूं। आप दरिद्रा, अलक्ष्मी का नाश कर मेरे घर से असमृद्धि को दूर करें।
- भर्तृहरि संहिता में कहा गया है कि जिसके पास लक्ष्मी (धन) है, वही कुलीन है, वही पंडित है, वही गुणी है, वही श्रेष्ठ है, वही दर्शनीय है। मतलब यह है कि ये सभी गुण लक्ष्मी के आश्रित हैं। लक्ष्मी कृपा से ही इन सुखों की पूर्ण प्राप्ति संभव है। मनुष्य तो क्या देवताओं को भी अपने देवत्व कार्य पूर्ण करने के लिए लक्ष्मी की आराधना करें।
- श्री ब्रह्मपुराण में उल्लेख किया गया है कि दीपावली की अर्द्धरात्रि में लक्ष्मीजी सद्गृहस्थों के घरों में जहां-तहां विचरण करती रहती हैं। इसलिए लक्ष्मी के स्वागत के लिए सभी श्रद्धायुक्त जन अपने-अपने घरों को सभी प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर रीति से सजाकर रखते हैं, ताकि लक्ष्मी प्रसन्न होकर उनके घर में प्रवेश करें व अपनी कृपा दिखाएं।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता:
नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमो नम:

महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त, कुबेर, बही खाता पूजन

धनतेरस पूजा मुहूर्त

18 अक्टूबर, शनिवार को प्रदोष काल का मुहूर्त शुभ रहेगा। इस दिन शाम के 4 बजकर 48 मिनट से लेकर शाम के 6 बजकर 18 मिनट तक का समय सबसे उत्तम रहेगा।

दिन का चौघड़िया

चर चौघड़िया : दिन के 12.6 से 1.31 बजे तक
लाभ चौघड़िया : दिन के 1.31 से 2.57 बजे तक
अमृत चौघड़िया : दिन के 2.57 से 4.22 बजे तक

शाम का चौघड़िया

लाभ चौघड़िया : शाम के 5.48 से 7.23 बजे तक
शुभ चौघड़िया : रात के 8.58 से 10.33 बजे तक
चर चौघड़िया : रात में 12.04 से लेकर मध्य रात्रि 1.39 बजे तक

20 अक्टूबर 2025, सोमवार, अमावस्या, विक्रम सं. 2082

लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

गोधूलि संध्या : शाम 5:46 से 6:12 बजे तक
प्रदोष काल : शाम 5:46 से 8:18 बजे तक
वृषभ लग्न : शाम 7:16 से 9:09 बजे तक
मिथुन लग्न आरंभ : शाम 9:10 से 11:22 बजे तक
सिंह लग्न : रात्रि 1:19 से रात्रि के 3:56 बजे तक
लाभ की चौघड़िया : शाम 9:30 से रात्रि 11:29 बजे तक
शुभ की चौघड़िया : रात्रि 1:03 से रात्रि के 2:37 बजे तक
अमृत काल : रात्रि 2:37 मिनट से प्रात: 4:11 बजे तक

दिन का चौघड़िया							समय	रात का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रात-दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. की ओर से कृषक जगत के पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल- जयपुर-रायपुर
शुभ
लाभ
जैन
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.
ॐ श्री लक्ष्मी प्रसन्न ॐ
महालक्ष्मी मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन महालक्ष्म्यै अस्मांक दारिद्र्य नाशय प्रचुर धन देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ।
जैन ड्रिप
जैन स्प्रिंकलर
जैन पाईप
जैन प्लम्बिंग
हाईटेक प्लॉन्ट फॅक्टरी
जैन टिश्यूकल्चर
जैन सोलर पम्प
JAIN Water Piping System
Solution for Generations.
drip TECH
A JAIN IRRIGATION COMPANY
जलगाँव - 0257-2258011; अलवर - 0144-2706611, 2706633; इंदौर - 9406802800; जयपुर - 9530390821; रायपुर - 9406802847

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.

जैन इरीगेशन सिस्टम लि.

वास्तुनुसार मनाएं दिवाली

दीपावली की रात लक्ष्मी आगमन की रात्रि मानी जाती हैं। दीपावली के आगमन की तैयारियाँ सभी लोग काफी दिन पहले से ही शुरू कर देते हैं। घर एवं प्रतिष्ठानों के कोने-कोने की सफ़ाई एवं रंगाई-पुताई इनमें उसी प्रकार से नई ऊर्जा का संचार कर देती हैं जैसे कि स्नान आदि करके शरीर में स्फूर्ति आ जाती हैं।

वास्तु में स्थान की सफ़ाई एवं स्वच्छता को विशेष महत्व दिया गया है। दीपमालिका के प्रकाश की जगमगाहट, आतिशबाजी का प्रकाश, दीपावली की इस महाकाल रात्रि में मन में उमंग एवं उल्लास भरता है। नए वस्त्रों से सुसज्जित गृहणियाँ अपने घर के द्वारों को रंगोली आदि से सजाती हैं। रंगोली के रंग और मुख्य द्वार पर लगी बन्दनवार अथवा तोरण के रंग भी धनात्मक ऊर्जा की वृद्धि करते हैं।

दीपावली के अवसर पर की जाने वाली गणेश लक्ष्मी की पूजा का भी अपना विशेष महत्व है। पूजा में यह ध्यान रखना चाहिए कि लक्ष्मी जी पहले और बाद में गणेश जी रखे जाएँ। यानि गणेश जी के दाहिने हाथ की तरफ़ लक्ष्मी जी को रखना चाहिए। गणेश जी की सूँड़ का रुख भी लक्ष्मी जी की तरफ़ होना चाहिए। उक्त गुणों से युक्त गणेश जी की प्रतिभा अच्छे परिणाम देती हैं।

दीपावली में धन के देवता कुबेर की पूजा का भी विशेष महत्व हैं। इसके लिए चाँदी के एक कटोरे में अपनी क्षमता अनुसार 5,11, 21 अथवा 51 चाँदी के पुराने सिक्के रखकर उत्तर की तरफ़ मुँह करके इनकी पूजा करनी चाहिए। पूजा के उपरान्त इस पात्र को दक्षिणी दीवार स्थित अलमारी में सुरक्षित रख लेना चाहिए। इसको कभी खर्च में नहीं लेना चाहिए। किसी वजह से चाँदी के सिक्के न उपलब्ध हो पाएँ, तो तांबे के पुराने सिक्के भी इस्तेमाल किये जा सकते हैं और अगर यह भी उपलब्ध नहीं हों फिर जो भी उपलब्ध हो उन सिक्कों को रखा जा सकता हैं।

विशेष ध्यान रखने की बात यह हैं कि कटोरे में सिक्के ही रखे जाएँ। कागज़ की मुद्रा न रखी जाय। कुबेर जी की पूजा के साथ-साथ आदि शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्त्रोत का पाठ लक्ष्मी प्राप्ति के उपायों में आश्चर्यजनक तीव्रता लाता हैं। ऐसा कहा गया है कि आदि गुरु शंकराचार्य जी किसी के द्वार पर भिक्षा के लिए गये। उस घर में गृह-स्वामिनी के पास एक आंवले के फल के अतिरिक्त उनको देने के लिए और कुछ नहीं था। श्री शंकराचार्य प्रभु को उसकी स्थिति पर दया आई और उन्होंने धन की देवी लक्ष्मी की आराधना की और उसके फल स्वरूप उक्त गृहिणी के घर में तत्काल स्वर्ण की बरसात हुई।

इस दीपावली पर आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ। आपके जीवन में भी स्वर्ण के साथ-साथ खुशियों और समृद्धि की बरसात होती रहे। यही मेरी ईश्वर से मंगल कामना हैं।

किसी भी व्यापार की समृद्धि में धनात्मक ऊर्जा का बहुत महत्व होता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है धनात्मक ऊर्जा धन से भी सम्बन्ध रखती है। चाहे घर की खुशहाली हो अथवा व्यापार की समृद्धि, दोनों ही बिना धन के अधूरे रहते हैं। दीपावली एवं उससे सम्बन्धित सभी त्यौहार धन वृद्धि के ही उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। धनतेरस, नरक चतुर्दशी एवं दीपावली के अगले दिन की जाने वाली गोवर्धन पूजा सभी धन एवं सम्पदा की वृद्धि से जुड़ी हुई हैं।

साधारण वस्तु नहीं है दीया

कहते हैं कि पाँच भौतिक तत्वों ने परस्पर मिल-जुलकर इंसान जैसी अनोखी चीज़ का निर्माण किया। ये तत्व हैं - मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश। छोटा-सा दिखने वाला दीये के निर्माण में भी इन्हीं तत्वों - मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश का योगदान है। अपनी गाँव का हीरा कुम्हार ताल-तलैया से, चिकनी मिट्टी लाता है। डंडे से पीटकर उसे महीन करता है। थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर उसे कर्मकार गूँथता है। खरपतवार और कंकरी-पथरी निकालकर उसका लोना बनाता है। इसके बाद बहुत सहज ढंग से उसे चाक पर रखता है।

चाक के बगल में बैठकर वह डंडे के सहारे उसे चक्रवत तेज़ चलाना शुरू करता है। अपने दोनों हाथ चाक के बीचों-बीच रखे लोना के चारों ओर अपनी कलात्मक अँगुलियाँ घुमाता है। हीरा कुम्हार के मन की बात और उसकी अँगुलियों की करामात है कि वह एक निर्जीव चाक के माध्यम से बड़े-बड़े घड़े बनाता है या छोटे-छोटे दीये। दीपावली के समय वह असंख्य दीया बनाने में जुटा है। उसे देखकर लगता है कि पृथ्वी रूपी चक्र चक्रवत चल रहा है और सृष्टि का नियामक बड़े इत्मिहान के साथ बैठकर अपनी मनचाही मूर्तियाँ गढ़ रहा है। दिनकर का ताप ही गीले दीये को सुखाकर पुष्ट करता है। आवां में सूखे गोबर की मधुर मद्धिम आग में यह दीया पकता है। इस प्रकार दीया अपनी वर्तिका को हवा की सहेली बनाकर शून्य यानी आकाश में जलता रहता है। दीया की निर्मिति में माटी, जल, आग, समीर और गगन बड़े करीने से सहयोग करते हैं।

ताप और प्रकाश का संवाहक

विज्ञान की बात है कि सूर्य स्थिर है, पृथ्वी चलती है। सूर्य एक ही समय पृथ्वी के आधे भाग को प्रकाश देता है और शेष को अंधकार। सूर्य मूलतः ताप और प्रकाश का संवाहक है, किंतु विशुद्ध ताप और प्रकाश में किसी जीवन का उद्भव संभव नहीं हो सकता। जीवन के उद्भव के लिए एक ही कोशिश में प्रकाश और अंधकार का अवांतर से बना रहना अनिवार्य है। सूर्य इसीलिए अपनी प्रिया धरती को एक साथ प्रकाश और अंधकार से संपृक्त किए रहता है, जिससे वह अपनी कोख से सभी प्रकार के जीवन को संभव बना सके।

साधारण वस्तु नहीं हैं दीया

दीया साधारण वस्तु नहीं हैं। कठिन, बेजोड़, श्रमसाध्यजनित इसकी निर्मिति है। दीया बनाने वाला कुम्हार, तेल निकालने वाला तेली, घी निकालने वाला अहीर, पोली वाला, बत्ती बनाने वाली घर की बुढ़िया, इन सबके तन-मन, नेह-निष्ठा, आस्था, विश्वास समन्वित रूप से दीये को लौ के रूप में उजागर होते हैं।

दीये की विजय यात्रा

अपनी विजय यात्रा में अकेला निर्भय जलता दीया प्रति वर्ष में एक बार कार्तिक की अमा रात्रि में विजय-पर्व का मनोरम रूप धारण करता है, क्यों कि अमावस्या में ही दुर्भय अंधकार को दूर भगाने की प्रकाश की सबसे अधिक उपादेयता होती है। इस प्रकार, दीया का जन्म एक लोकोत्सव बन जाता है। इसकी लौ में अनेक मिथक, प्रतीक एवं बिंब जुट जाते हैं।

मानो आदमी और दीया का मनोभाव एकाकार होकर स्नेह-श्रद्धा, लोक-परलोक और मृण्मय-चिन्मय की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ कैवल्य में तिरोहित हो जाता है।

अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर चल

भारत पर्व प्रधान देश भी है जहाँ वर्ष भर में प्रत्येक महीने कोई न कोई पर्व आ ही जाता है, जिसके पीछे केवल उत्सव मनाकर बाहरी आनंद लूटना मात्र उद्देश्य नहीं होता। उसके पीछे एक महान उद्देश्य को लिए हुए किसी लक्ष्य की प्राप्ति का महासंदेश निहित होता है। दीपावली या महालक्ष्मी आराधना का पर्व भी किसी लक्ष्य विशेष की ओर संकेत करता है।

इसमें उपनिषद् का यह वाक्य तमसो मा ज्योतिर्गमय इस पर्व का ध्येय वाक्य है। यहाँ तम और ज्योति दो शब्दों का प्रयोग हुआ है। तम का अर्थ सामान्यतः अंधकार होता है और ज्योति का अर्थ प्रकाश लेकिन क्या हम अमावस की कालीरात्रि को दीपक, बिजली की मालाएं, बम-पटाखे और फुलझड़ियां जलाकर अंधेरे को मिटा पाते हैं? यदि ऐसा होता तो फिर साल के बाद दीपावली मनाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

वैसे भी हर महीने अमावस की रात आती रहती है तब किस अंधकार से हटकर हमें किस प्रकाश की ओर बढ़ने का उपनिषद् आदेश देता है। दीप, माला, फुलझड़ी, पटाखे आदि तो मात्र ध्यानाकर्षण के वाह्य प्रतिमान हैं।

वस्तुतः मनुष्य के अंतःकरण में जो राग-द्वेष आदि के कारण अज्ञान का अंधकार छाया रहता है उसके कारण व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत होकर हित-अहित, कर्तव्य, अकर्तव्य के विवेक से शून्य होकर पाप, शोषण, अत्याचार, अन्याय, प्रतिशोध, घृणा आदि की कालीपरतों से घिर जाता है उस अज्ञान की कालीरात्रि से उपराम होने के लिए सत्य, प्रेम, अहिंसा, सौहार्द्र, न्यायप्रियता, कर्तव्यपालन सहित अनंत ज्योतिकिरणों की फुलझड़ियों से अपने जीवन को जगमगा दें।

> उपनिषद् वाक्य कहता है असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय यानी कि असत् की ओर नहीं ज्योति की ओर बढ़ो, मृत्यु की ओर नहीं, अमृतत्व की ओर बढ़ो। यहां क्रिया का प्रयोग न कर लोट् लकार अर्थात् आज्ञा वाचक क्रिया का प्रयोग किया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मानव तू अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर चल।

दीपावली का पर्व हमें स्वयं जागृत होकर अपने आसपास को भी जागृत करने का संदेश देता है। इसीलिए कहा है आप्त दीपो भव यदि हम अपने अंतःकरण में ज्ञान की ज्योति जलाने में समर्थ हो जाते हैं तो उसके प्रभाव से हमारे आस-पास का परिवेश भी जागृत होने लगेगा।

एक जलता दीप दूसरे दीप को प्रज्ज्वलित करते-करते अनंत दीपों का प्रकाशक हो जाएगा तभी संपूर्ण संसार से अज्ञान का अंधकार छंटकर ज्ञान का आलोक छा जाएगा तब उस आलोकित आभा में परमात्मा की इस अनूठी रचना का एक-एक सत्य प्रतिभाषित होने लगेगा और चारों ओर सुख-शांति की श्री बिखर जाएगी यही श्री यानि शोभा ही तो है वास्तविक महालक्ष्मी की अखंड कृपा।

भारतवर्ष से इन पर्वों का सारे विश्व को प्राचीन काल से यही संदेश मिलता रहा इसलिए हम विश्व बंधुत्व की भावना के प्रथम उद्घोषक कहलाते हैं। यही भावना हमें विश्व गुरु बनाए रखती है इसीलिए हमारे हिंदुस्तान का एक प्राचीन नाम भारतवर्ष भी है जिसका अर्थ है भाषायाँ रतः स एव भारतः अर्थात भा का तात्पर्य है प्रकाश, रत का तात्पर्य है लगे रहना अतः जो निरंतर प्रकाश की ओर, ज्ञान की ओर, ईश्वर की खोज की ओर प्रयत्न रहे वही भारत है। अतः महालक्ष्मी पूजा का यह प्रकाश पर्व हमें भारतवर्ष का सच्चा भक्त होने का प्रमाण भी देता है। आवश्यकता है इस पर्व के दिन आत्ममंथन की, क्या हम भारतवर्ष नाम को सार्थक करने में अग्रसर हैं।

कौन-कौन से आठ स्थानों पर दीपक लगाना चाहिए

दीपावली की रात महादेवी लक्ष्मी को मनाने का सबसे अच्छा समय रहता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि इस रात देवी महालक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं। अत- इस रात को देवी को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न उपाय बताए गए हैं। प्राचीन समय से परंपरा चली आ रही है कि दीपावली की रात में कुछ विशेष स्थानों पर दीपक लगाने से देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। यहां जानिए दिवाली की रात में कहां-कहां दीपक लगाना चाहिए, जिससे आपकी पैसों से जुड़ी समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।

जानिए कौन-कौन से आठ स्थानों पर दीपक लगाना चाहिए...

- पीपल के पेड़ के नीचे दीपावली की रात एक दीपक लगाकर घर लौट आएं। दीपक लगाने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने पर आपकी धन से जुड़ी समस्याएं दूर हो सकती हैं।
- यदि संभव हो सके तो दिवाली की रात के समय किसी श्मशान में दीपक लगाएं। यदि यह संभव ना हो तो किसी सुनसान इलाके में स्थित मंदिर में दीपक लगा सकते हैं।
- धन प्राप्ति की कामना करने वाले व्यक्ति को दीपावली की रात मुख्य दरवाजे की चौखट के दोनों ओर दीपक अवश्य लगाना चाहिए।
- हमारे घर के आसपास वाले चौराहे पर रात के समय दीपक लगाना चाहिए। ऐसा करने पर पैसों से जुड़ी समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।
- घर के पूजन स्थल में दीपक लगाएं, जो पूरी रात बुझना नहीं चाहिए। ऐसा करने पर महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।
- किसी बिल्व पत्र के पेड़ के नीचे दीपावली की शाम दीपक लगाएं। बिल्व पत्र भगवान शिव का प्रिय वृक्ष है। अतः यहां दीपक लगाने पर उनकी कृपा प्राप्त होती है।
- घर के आसपास जो भी मंदिर हो वहां रात के समय दीपक अवश्य लगाएं। इससे सभी देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।
- घर के आंगन में भी दीपक लगाना चाहिए। ध्यान रखें यह दीपक भी रातभर बुझना नहीं चाहिए।

दीवाली की परंपराओं में जीवन प्रबंधन के सूत्र

दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व श्रीगणेश को क्यों पूजते हैं?- दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व गणपति की पूजा भी की जाती है। इसके पीछे लाइफ मैनेजमेंट से जुड़े कई खास सूत्र छिपे हैं। लक्ष्मी धन की देवी हैं, सरस्वती ज्ञान की तथा गणपति बुद्धि के देवता हैं।

दीपावली पर क्यों खाते हैं खील-बताशे?- दीपावली धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति का त्योहार है। इस दिन मां लक्ष्मी का पूजन कर जीवनभर धन-संपत्ति की कामना की जाती है। खील-बताशे का प्रसाद किसी एक कारण से नहीं बल्कि उसके कई महत्व है, व्यवहारिक, दार्शनिक, और ज्योतिषीय ऐसे सभी कारणों से दीपावली पर खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

दीपावली पर क्यों करते हैं दीपदान?- धनतेरस से दीपावली तक नदी-तालाबों में दीपदान करने का प्रचलन है। शास्त्रों का मानना है कि दीपदान करने से नरक के दर्शन नहीं होते। दीपदान में लाइफ मैनेजमेंट के सूत्र भी छिपे हैं। दरअसल दीपदान इस बात का संकेत है कि हम अपने जीवन में ज्ञान और धर्म का उजाला लाएंगे। अज्ञान और अधर्म के कारण ही व्यक्ति को नर्क के दर्शन होते हैं यानी मरने के बाद नर्क में जाना पड़ता है। अज्ञानता के कारण हम अच्छे-बुरे का भेद नहीं कर पाते, परमात्मा को नहीं पहचान पाते। ज्ञान आने पर यह परेशानी दूर हो जाती है। ज्ञान आता है तो उसके साथ ही धर्म भी हमारे जीवन में प्रवेश करता है।

क्यों भगवान विष्णु के पैरों की ओर बैठती हैं माता लक्ष्मी?- हम सभी ने भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के कई चित्र देखें हैं। अनेक चित्रों में भगवान विष्णु को बीच समुद्र में शेषनाग के ऊपर लेटे और माता लक्ष्मी को उनके चरण दबाते हुए दिखाया जाता है। माता लक्ष्मी यूं तो धन की देवी हैं तो भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही निवास करती हैं ऐसा क्यों? इसका कारण हैं कि भगवान विष्णु कर्म व पुरुषार्थ का प्रतीक हैं और माता लक्ष्मी उन्हीं के यहां निवास करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटते और कर्म व अपने पुरुषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करते हैं जैसे कि भगवान विष्णु।

कमल के फूल पर ही क्यों बैठती हैं माता लक्ष्मी? - महालक्ष्मी के चित्रों और प्रतिमाओं में उन्हें कमल के पुष्प पर विराजित दर्शाया गया है। इसके पीछे धार्मिक कारण तो है साथ ही कमल के पुष्प पर विराजित लक्ष्मी जीवन प्रबंधन का महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं। महालक्ष्मी धन की देवी हैं। धन के संबंध में कहा जाता है कि इसका नशा सबसे अधिक दुष्प्रभाव देने वाला होता है। धन मोह-माया में डालने वाला है और जब धन किसी व्यक्ति पर हावी हो जाता है तो अधिकांश परिस्थितियों में वह व्यक्ति बुराई के रास्ते पर चल देता है। इसके जाल में फंसने वाले व्यक्ति का पतन होना निश्चित है। वहीं कमल का फूल अपनी सुंदरता, निर्मलता और गुणों के लिए जाना जाता है।

मप्र में रबी वर्ष 2025-26 के लिये बुवाई का लक्ष्य (इकाई : हजार हेक्टेयर)

क्र.	जिला	गेहूं	जौ	चना	मसूर	मटर	राई-सरसों	अलसी	गन्ना	कुल रबी योग
1.	जबलपुर	190.00	0.00	32.50	6.00	40.50	6.50	0.50	2.00	278.00
2.	कटनी	195.00	0.10	12.50	4.50	2.50	24.50	0.60	0.00	239.70
3.	बालाघाट	65.00	0.50	65.00	2.20	3.00	46.00	30.00	1.50	213.20
4.	छिंदवाड़ा	289.50	0.00	43.00	3.00	5.50	35.00	1.50	9.00	386.50
5.	पांढुर्णा	18.50	0.00	3.00	0.01	0.20	0.60	0.01	0.05	22.37
6.	सिवनी	278.00	0.00	51.00	13.50	6.00	15.50	2.00	3.00	369.00
7.	मण्डला	52.00	0.00	24.00	28.00	28.50	19.00	7.40	3.00	161.90
8.	डिंडोरी	45.00	0.00	27.00	39.20	15.00	18.50	7.90	0.00	152.60
9.	नरसिंहपुर	120.00	0.00	90.00	32.00	18.00	2.50	1.00	65.00	328.50
जबलपुर संभाग		**1253.00**	**0.60**	**348.00**	**128.41**	**119.20**	**168.10**	**50.91**	**83.55**	**2151.77**
10.	सागर	335.00	0.10	55.00	93.00	26.00	1.50	1.10	0.02	511.72
11.	दमोह	176.00	0.00	69.00	34.00	40.00	5.00	1.00	0.05	325.05
12.	पन्ना	151.29	0.70	31.22	26.78	18.50	25.40	0.13	0.00	254.02
13.	टीकमगढ़	183.00	1.20	12.00	1.40	5.50	28.00	0.11	0.00	231.21
14.	निवाड़ी	67.77	1.01	3.50	0.82	1.95	5.90	0.00	0.00	80.95
15.	छतरपुर	318.00	10.00	45.00	12.50	33.00	60.00	2.00	0.12	480.62
सागर संभाग		**1231.06**	**13.01**	**215.72**	**168.50**	**124.95**	**125.80**	**4.34**	**0.19**	**1883.57**
16.	रीवा	148.38	0.55	2.55	4.96	1.45	19.15	3.69	0.00	180.73
17.	मऊगंज	87.18	0.46	4.16	3.46	0.35	18.54	2.65	0.00	116.80
18.	सतना	229.00	1.80	9.00	6.25	1.50	12.00	0.73	0.00	260.28
19.	मैहर	95.00	0.40	3.50	5.00	1.50	4.00	0.40	0.00	109.80
20.	सीधी	120.00	1.60	10.75	2.05	1.00	12.60	3.60	0.00	151.60
21.	सिंगरोली	82.00	3.30	8.00	2.60	2.00	33.00	3.00	0.00	133.90
रीवा संभाग		**761.56**	**8.11**	**37.96**	**24.32**	**7.80**	**99.29**	**14.07**	**0.00**	**953.11**
22.	शहडोल	75.00	1.75	12.00	2.30	1.80	11.80	8.50	0.00	113.15
23.	अनपूपुर	25.00	0.50	20.50	23.00	4.50	8.60	11.00	0.00	93.10
24.	उमरिया	63.12	0.15	23.50	7.10	1.65	8.45	4.25	0.02	108.24
शहडोल संभाग		**163.12**	**2.40**	**56.00**	**32.40**	**7.95**	**28.85**	**23.75**	**0.02**	**314.49**
25.	इन्दौर	192.00	0.00	8.50	0.30	0.91	0.10	0.05	0.05	201.91
26.	धार	322.00	0.00	65.00	1.00	6.00	0.50	1.50	2.00	398.00
27.	झाबुआ	93.50	0.00	17.50	1.05	0.35	0.20	1.22	0.00	113.82
28.	खरगौन	165.00	0.00	156.00	0.05	0.01	0.07	0.00	0.70	321.83
29.	बड़वानी	96.15	0.00	36.70	0.28	0.04	0.03	0.01	2.35	135.56
30.	खण्डवा	185.50	0.00	79.00	0.45	0.20	2.00	0.03	0.50	267.68
31	बुरहानपुर	22.00	0.00	18.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.00	43.00
32.	अलीराजपुर	42.55	0.00	19.63	0.02	0.03	0.04	0.00	0.00	62.27
इन्दौर संभाग		**1118.70**	**0.00**	**400.33**	**3.15**	**7.54**	**2.94**	**2.81**	**8.60**	**1544.07**
33.	उज्जैन	401.00	0.00	20.00	5.00	20.00	19.00	2.00	0.00	467.00
34.	मंदसौर	220.00	0.00	35.00	15.00	0.00	20.00	10.00	0.00	300.00
35.	नीमच	105.00	1.20	24.00	4.50	0.20	8.00	3.00	0.00	145.90
36.	रतलाम	275.00	0.05	8.50	4.00	1.00	7.50	2.80	0.00	298.85
37.	देवास	309.00	0.00	50.00	0.60	0.20	15.00	0.05	0.10	374.95
39.	शाजापुर	200.00	0.00	14.25	27.85	0.40	25.25	1.00	0.00	268.75
38.	आगर मालवा	155.63	0.04	3.00	15.00	0.02	9.50	0.50	0.00	183.69
उज्जैन संभाग		**1665.63**	**1.29**	**154.75**	**71.95**	**21.82**	**104.25**	**19.35**	**0.10**	**2039.14**
40.	मुरैना	95.00	1.78	4.75	0.25	0.93	163.94	0.32	0.00	266.97
41.	भिण्ड	98.00	2.00	4.00	1.00	2.00	228.00	0.00	0.00	335.00
42.	श्योपुर	100.50	0.60	10.00	0.20	0.45	70.00	0.20	0.00	181.95
मुरैना संभाग		**293.50**	**4.38**	**18.75**	**1.45**	**3.38**	**461.94**	**0.52**	**0.00**	**783.92**
43.	ग्वालियर	140.00	0.20	10.00	0.40	7.50	48.00	0.02	2.00	208.12
44.	शिवपुरी	328.00	2.00	22.00	15.00	1.80	72.00	1.50	0.20	442.50
45.	गुना	210.00	0.50	45.00	20.00	1.00	16.50	1.00	0.00	294.00
46.	अशोकनगर	215.96	0.10	18.65	37.47	6.59	16.93	0.20	0.00	295.90
47.	दितिया	168.00	1.50	20.00	0.50	13.00	20.00	0.00	7.00	230.00
ग्वालियर संभाग		**1061.96**	**4.30**	**115.65**	**73.37**	**29.89**	**173.43**	**2.72**	**9.20**	**1470.52**
48.	भोपाल	145.00	0.00	6.00	0.25	0.05	0.41	0.05	0.04	151.80
49.	सीहोर	344.00	0.00	38.00	10.00	0.05	1.50	0.01	0.03	393.59
50.	रायसेन	280.00	0.00	109.00	34.00	0.30	5.00	0.50	2.25	431.05
51.	विदशा	360.00	0.00	78.00	68.00	4.00	14.00	0.20	0.00	524.20
52.	राजगढ़	383.50	0.05	6.00	18.00	0.07	14.04	0.00	0.00	421.66
भोपाल संभाग		**1512.50**	**0.05**	**237.00**	**130.25**	**4.47**	**34.95**	**0.76**	**2.32**	**1922.30**
53	होशंगाबाद	260.00	0.00	60.00	1.00	1.00	3.00	1.00	4.50	330.50
54	हरदा	100.00	0.00	40.00	0.05	0.10	2.00	0.01	0.00	142.16
55	बैतूल	260.00	0.00	44.00	1.00	2.00	18.00	0.08	24.50	349.58
होशंगाबाद संभाग		**620.00**	**0.00**	**144.00**	**2.05**	**3.10**	**23.00**	**1.09**	**29.00**	**822.24**
	योग	**9681.03**	**34.14**	**1728.16**	**635.85**	**330.10**	**1222.55**	**120.32**	**132.98**	**13885.13**

स्त्रोत : कृषि विभाग, मप्र

बीएईआरसी का चैप्टर अब ग्वालियर में भी

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कृषि विज्ञान केन्द्र में भारतीय कृषि आर्थिक अनुसंधान केंद्र (बीएईआरसी) के चैप्टर का शुभारंभ गत सप्ताह किया गया। बीएईआरसी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. एस.के. दुबे ने प्रगतिशील किसानों के साथ परिचर्चा कर उनकी समस्याओं और समाधान पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही विश्वविद्यालय के निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ. वाय.पी. सिंह को ग्वालियर चैप्टर का संयोजक तथा कृषि विज्ञान केन्द्र प्रभारी डॉ. शैलेन्द्र सिंह कुशवाह को सह-संयोजक घोषित किया। 15 सदस्यों की कार्यकारिणी की घोषणा भी हुई। डॉ. दुबे ने कहा कि बीएईआरसी की अनिवार्य गतिविधियों को स्थानीय स्तर पर शीघ्र आरंभ किया जाएगा, ताकि प्रदेश के किसानों की क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से प्रभावी ढंग से किया जा सके।

पहली बार पीला मोजेक पर मिला मुआवजा

मंदसौर (कृषक जगत)। मंदसौर जिले के छोटे से गाँव अरनिया देव में रहने वाले किसान श्री राधेश्याम पाटीदार इस साल बड़ी उम्मीदों के साथ अपनी सोयाबीन की फसल बोए थे। हर रोज़ वे खेत में जाकर पौधों की बढ़त देखते, मेहनत करते, और अच्छे उत्पादन के सपने देखते थे। लेकिन मौसम ने करवट ली और अचानक पीला मोजेक रोग ने उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया। देखते ही देखते हरी-भरी फसल पीली पड़ने लगी, पत्तियाँ सिकुड़ने लगीं, और पूरा खेत जैसे सूखने लगा। लेकिन इस बार हालात कुछ अलग थे। सरकार ने किसानों की इस परेशानी को समझा और पहली बार पीला मोजेक रोग से प्रभावित सोयाबीन फसल पर मुआवजा राशि देने का निर्णय लिया। राधेश्याम पाटीदार को 5000 का मुआवजा मिला, और उनके पिताजी को 21000 की राहत राशि दी गई।

सोयाबीन प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

शिवपुरी (कृषक जगत)। भारत सरकार के कृषि मंत्रालय की तिलहन प्रक्षेत्र विस्तार योजनान्तर्गत खरीफ 2025 में तिलहनी फसल सोयाबीन (किस्म-आर.व्ही.एस.एम. 1135) के क्लस्टर प्रक्षेत्र प्रदर्शन शिवपुरी जिले के विभिन्न विकासखण्डों में कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी के माध्यम एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित किए गए।

इस कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. प्रशान्त कुमार गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक (उद्यानिकी) द्वारा बताया गया कि जिले के विकासखण्ड कोलारस, शिवपुरी के प्रक्षेत्र पर सोयाबीन उन्नत किस्म (आर.व्ही.एस.एम.-1135) के प्रदर्शन डाले गए। सोयाबीन की इस किस्म के प्रदर्शन हेतु प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन कोलारस विकासखण्ड के नेतवास ग्राम में आयोजित किया गया। जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. प्रशान्त कुमार गुप्ता द्वारा सोयाबीन की किस्म (आर.व्ही.एस.एम.-1135) की विशेषताओं, तुड़ाई, श्री विजय प्रताप कुशवाह द्वारा सोयाबीन तुड़ाई में मशीनीकरण, डॉ. सुरूचि सोनी द्वारा सोयाबीन के विभिन्न उत्पादों की विस्तृत जानकारी दी गई।

समस्या– सूरन कंद/गराडु की खेती के संबंध में जानकारी दें।

– सुन्दरलाल

समाधान– *यह रतालू, जिमीकंद, गराडु,*

सूरन के नाम से जाना जाता है।

- *अच्छी निकासी वाली उपजाऊ दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है,*
- *एक हेक्टेयर में 20 से 30 क्विंटल बीज लगेगा।*
- *अच्छी तैयारी जमीन में 50–50 से.मी दूरी पर डोलियां बना लें।*
- *पर्याप्त गोबर खाद खेत में मिला दें।*
- *भूमि में आखिरी जुताई में 250 किलो पोटाश मिला दे।*
- *बुआई अप्रैल से जून तक करें।*
- *इन डोलियों में 30 से.मी. दूरी पर 6 से.मी. गहराई पर सूरन, रतालू लगाये।*
- *बुआई के पूर्व बीज के टुकड़ों को मेन्कोजेब के 0.2 प्रतिशत घोल से 5 मिनट तक उपचारित कर लें।*
- *जब बेले 30 से.मी. लंबी हो जायें छड़ियां या अन्य विधि से उन्हें सहारा दें।*
- *25 किलो नत्रजन बुआई के तीन माह बाद दें।*
- *प्रमुख जातियां हैं श्री विधि,श्री रूपा, श्री शुभ्रा, श्री प्रिया।*
- *प्रथम सिंचाई बुआई के तुरन्त बाद करें। फसल को 15 से 25 सिंचाई की आवश्यकता होती है।*
- *निराई करते समय पौधों में मिट्टी चढ़ाते रहे।*
- *फसल दिसम्बर–जनवरी में (8–9 माह बाद) खुदाई लायक हो जाती है।*
- *उपज 250 से 400 क्विंटल/हे. आती है।*

समस्या– वर्तमान में पानी के छोटे–मोटे झल्ले आ रहे हैं। क्या अभी गेहूं की बुआई की जा सकती है। कौन सी जाति, कितना खाद कृपया बतायें।

– मनमोहन ठाकुर

समाधान– *वर्तमान की वर्षा रबी फसलों के लिये वरदान साबित हो रही है। पानी के झल्लों से भूमि को भीतरी नमी और बाहरी नमी मिल रही हैं जो जड़ों के विकास के लिये बहुत उपयोगी है। मौसम में ठण्डक भी हो गई है। आप वर्षा आधारित गेहूं की बुआई शुरू कर सकते हैं। गेहूं के अलावा यदि अन्य रबी फसल भी लेना हो तो मसूर, अलसी, मटर की बुआई पहले करें फिर गेहूं की बोनी अक्टूबर में ही निपटाई जा सकती है। आप निम्न उपाय करें।*

- *जातियों में सी–306, सुजाता, एच 50–2004, मेघदूत, नर्मदा 4, नर्मदा 112 इत्यादि*

लगा सकते हैं।

- *एक हेक्टर में 100–125 किलो लगेगा।*
- *कतार से कतार 25–30 से.मी. बीज 6 से.मी. गहराई पर बोयें।*
- *उर्वरक में यूरिया 87 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 125 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 33 किलो प्रति हे. की दर से डालें।*
- *बोआई पूर्व बीज का उपचार 2 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज द्वारा करें।*
- *कृषक जगत द्वारा गेहूं फसल की उत्पादन तकनीकी का विस्तार से पुस्तक का प्रकाशन किया गया है, आप उसे बुलवा लें अधिक मार्गदर्शन मिलेगा।*

समस्या– मटर की बोनी कब तक की जानी चाहिए। अगेती मटर की जातियां कौन–कौन सी हैं, बतायें।

– मुन्नालाल सोनी

समाधान– *मटर यदि अगेती लगाई जाये तो अच्छी आमदनी मिल सकती है। आप मटर अभी लगा सकते हैं, पानी के झल्ले आ रहे हैं भूमि में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो रही है। आप निम्न तकनीकी अपनायें।*

- *भूमि की तैयारी अच्छी तरह से करें ताकि अच्छा अंकुरण मिल सके।*
- *जातियों में अर्किल, जवाहर मटर 3, जवाहर मटर 4, जवाहर मटर 54 तथा आजाद।*
- *अच्छे अंकुरण के लिये यदि बीज को 24 घंटे पानी में भिगोकर रखें, छाया में सुखाकर 2 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज का उपचार करें।*
- *इसके अलावा बीज का उपचार राइजोबियम कल्चर 200 ग्राम का पैकट 10 किलो बीज के लिए पर्याप्त होगा।*
- *बीज दर 125 से 140 किलो प्रति हेक्टर की दर से डालें।*
- *उर्वरक में यूरिया 43 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 250 किलो तथा 33 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हे. की दर से डालें।*
- *निंदाई–गुड़ाई करके खरपतवार को निकालें।*

समस्या– चना, मटर, मसूर में कौन से खरपतवारनाशी का उपयोग किया जा सकता है, कब डालें।

– ललित किशोर

समाधान– *चना, मटर, मसूर, दलहनी फसलें हैं, प्राय: सभी फसलों की बुआई के लिये खेत की तैयारी अच्छे ढंग से नहीं की जाती है। आप निम्न तकनीक अपनायें।*

- *खेत की तैयारी अन्य फसलों की तरह ही करें।*
- *बुआई के समय नमी खेत में होनी चाहिए। क्योंकि आमतौर पर असिंचित अवस्था में ही उक्त फसलें लगाई जाती हैं।*
- *खरपतवार की समस्या कम करने के लिए चने की खुटाई करते समय निराई भी करें अच्छा लाभ होगा।*
- *रसायनिक उपचार में बासालिन 750–1000 मि.ली. सक्रिय तत्व का छिड़काव बुआई के पूर्व खेत में नमी होने पर डालें।*
- *इसमें कुछ चौड़ी पत्ती वाले तथा घास कुल के खरपतवार नष्ट हो जायेंगे।*
- *डुआल 1000 से 1500 मि.ली. सक्रिय तत्व बुआई करते समय अथवा बुआई के तीन दिन के भीतर छिड़काव करें।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
वार्षिक रु. 600/- दो वर्ष रु. 1000/- तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई–मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।
कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222
पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल–462011 फोन: 0755–4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच–64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी–5, सेक्टर–2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331–332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952
सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

दीपावली के स्वादिष्ट व्यंजन

परतदार शकरपारे

सामग्री : मैदा चार कप, मोयन के लिए घी एक कप, शक्कर दो कप, पानी आधा कप, तलने के लिए घी, दो कप शक्कर से बनी दो तार की चाशनी।

विधि : मैदे में घी का मोयन देकर गुनगुने पानी की मदद से पूड़ी के आटे जैसा गूंथ लें। अब इसको गोल आकार में बेलकर लंबी-लंबी स्ट्रिप काटें। प्रत्येक स्ट्रिप पर थोड़ा-सा पानी फेरकर गोल-गोल करके फोल्ड कर दें। सारी स्ट्रिप को इसी तरह फोल्ड करके रखें।

अब कड़ाही में घी गरम करके धीमी आंच पर कुरकुरा होने तक तलें। जब सारे पारे तैयार हो जाएं तो दो कप शक्कर में आधा कप पानी डालकर दो तार की चाशनी तैयार करें। चाशनी ठंडी होने पर सभी पारे एक-एक करके उसमें डालकर निकालें। थोड़ी देर बाद एयर टाइट डिब्बे में रखें।

बेसन की कुरकुरी नमकीन पपड़ी

सामग्री: दो कटोरी बेसन, आधा कप तेल मोयन के लिए, अजवाइन व लाल मिर्च दो चम्मच, सौंफ, हींग, चुटकी भर बेकिंग पावडर, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए तेल।

विधि: सबसे पहले बेसन में मोयन व सारी सामग्री अच्छी तरह मिलाकर गुनगुने पानी से सख्त गूंथे। छोटी-छोटी लोई बनाकर पतला बेलें। इन्हें चाकू से गोदकर थोड़ी देर कपड़े पर सूखने दें। अब एक कड़ाही में तेल गर्म करके मध्यम आंच पर गुलाबी होने तक तलें। तैयार कुरकुरी बेसन की नमकीन पपड़ी खिलाएं।

मीठे-मीठे अनारसे

सामग्री : 3 से 4 कप चावल, शक्कर, 1 चम्मच खसखस, घी या डालडा, दूध।

विधि: अनारसे बनाने की प्रक्रिया तीन दिन पहले से शुरू हो जाती है। जिस दिन अनारसे बनाना है उससे तीन दिन पहले चावल को धो लें। उसके बाद चावल में पानी डालकर रात भर के लिए रख दें।

दूसरे दिन चावल का पानी बदल कर फिर से रात भर के लिए रख दें। दूसरे दिन चावल से पानी अलग कर चावल सुखा लें और फिर उसे मिक्सी में ग्राइंड कर लें।

चावल से थोड़ी कम मात्रा में शक्कर लेकर उसे भी मिक्सी में ग्राइंड कर लें। चावल और शक्कर को मिलाकर गूंध लें और फिर रात भर के लिए रख दें। इसके बाद अनारसे बनाने से तीन चार घंटे पहले दूध मिलाकर गूंधे हुए आटे को छोड़ दें।

तीन चार घंटे बाद आटे की छोटी-छोटी पीठी बनाकर एक तरफ खसखस लगाएं। पीठी के जिस तरफ खसखस लगा है उस तरफ से घी में गोल्डन ब्राउन होने तक तल लें। इसे सिर्फ एक तरफ से ही तला जाता है। यह अनारसे एक तरह से मुलायम और दूसरी तरफ से थोड़े कड़े होते हैं।

माँ लक्ष्मी को कैसे प्रसन्न करें

● महालक्ष्मी के चित्र का पूजन करें, जिसमें लक्ष्मी अपने स्वामी भगवान विष्णु के पैरों के पास बैठी हैं। ऐसे चित्र का पूजन करने पर देवी बहुत जल्द प्रसन्न होती हैं।

● लक्ष्मी पूजन में सुपारी रखें। सुपारी पर लाल धागा लपेटकर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि पूजन सामग्री से पूजा करें और पूजन के बाद इस सुपारी को तिजोरी में रखें।

● दीपावली पर तेल का दीपक जलाएं और दीपक में एक लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। किसी हनुमान मंदिर जाकर ऐसा दीपक भी लगा सकते हैं।

● रात को सोने से पहले किसी चौराहे पर तेल का दीपक जलाएं और घर लौटकर आ जाएं। ध्यान रखें पीछे पलटकर न देखें।

● दीपावली के दिन अशोक के पेड़ के पत्तों से वंदनद्वार बनाएं और इसे मुख्य दरवाजे पर लगाएं। ऐसा करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी।

● महालक्ष्मी के पूजन में पीली कौड़ियां भी रखनी चाहिए। ये कौड़िया पूजन में रखने से महालक्ष्मी बहुत ही जल्द प्रसन्न होती हैं। आपकी धन संबंधी सभी परेशानियां खत्म हो जाएंगी।

● दीपावली की रात लक्ष्मी पूजा करते समय एक थोड़ा बड़ा घी का दीपक जलाएं, जिसमें नौ बत्तियां लगाई जा सके। सभी 9 बत्तियां जलाएं और लक्ष्मी पूजा करें।

● दीपावली की रात में लक्ष्मी पूजन के साथ ही अपनी दुकान, कम्प्यूटर आदि ऐसी चीजों की भी पूजा करें, जो आपकी कमाई का साधन हैं।

● दीपावली के दिन घर से निकलते ही यदि कोई सुहागन स्त्री लाल रंग की पारंपरिक ड्रेस में दिख जाए तो समझ लें आप पर महालक्ष्मी की कृपा होने वाली है। यह एक शुभ शकुन है। ऐसा होने पर किसी जरूरतमंद सुहागन स्त्री को सुहाग की सामग्री दान करें।

● दीपावली की रात में लक्ष्मी और कुबेर देव का पूजन करें और यहां दिए एक मंत्र का जप कम से कम 108 बार करें।

मंत्र: ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रववाय, धन-धान्यधिपतये धन-धान्य समृद्धि मम देहि दापय स्वाहा।

● महालक्ष्मी के पूजन में गोमती चक्र भी रखना चाहिए। गोमती चक्र भी घर में धन संबंधी लाभ दिलाता है।

● दीपावली से एक नियम हर रोज के लिए बना लें। आपके घर में जब भी खाना बने तो उसमें से सबसे पहली रोटी गाय को खिलाएं।

स्वास्थ्य शिक्षण

स्वस्थ सेहत के लिए क्या करें

● हर व्यक्ति फल खाता है, परन्तु यह नहीं जानता कि कैसे खायें. पका हुआ केला शहद के साथ खायें, अति स्वास्थ्यवर्धक होगा। अधपका केला नहीं खाना चाहिए। केले को दूध के साथ मिलाकर शेक न बनाये बल्कि पहले दो केले खाये फिर ऊपर से गर्म दूध पियें, देह मांसल होगी।

● जब नींद न आये- पैर के नाखूनों पर तेल लगायें। भांग पीस कर तलुवों पर लगायें, जल्द नींद आ जायेगी। तुलसी के एक मुट्ठी भर पत्ते तकिये के नीचे रख दें।

● नेत्रज्योति- रोज नहाने से पूर्व पांव के अंगूठों में सरसों का तेल मलें, नेत्रज्योति बुढ़ापे तक कमजोर नहीं होगी।

● मोतियाबिन्द- रोज माथे पर असली चंदन घिस कर लगायें, मोतियाबिन्द नहीं होगा।

● दीर्घायु- जिस दिन बच्चा पैदा हो, उस दिन से 10 दिन तक लगातार बच्चे को असली सोने के चावल का आठवा भाग घिस कर थोड़ा सा जल मिला कर चटायें।

● आंखे दुखना - यदि यह महसूस हो कि आंखों में दर्द होने वाला है या फिर दर्द आरंभ हो गया हो तो ऐसी स्थिति में उसी समय उसी ओर के कान में रुई ठूस लें. यदि दोनों आंखों में दर्द है, तो दोनों कानों में रुई ठूंस लें. 2-3 घंटे के लिए दर्द ठीक हो जायेगा।

● हर प्रकार की खांसी दूर करें- गुदा पर दिन भर में 3-4 बार तेल चुपड़ते रहें, खांसी दूर हो जायेगी।

● पसली में दर्द- हींग को गरम पानी में घोल कर दर्द वाली पसली पर लेप करें, पसली का दर्द ठीक होगा।

● दाद, खाज, सिर की गंज- पका हुआ केला (केले का गूदा) नींबू के रस में पीस कर मलहम की तरह प्रभावित जगह पर लेप करें. इससे दाद, खाज, गंज में लाभ होगा।

● खूनी बवासीर में भुने हुए चने गरम-गरम खाने से आराम मिलता है।

● जब दस्त हो रहे हों- लौकी का रायता खायें।

● पैर के तलवे में जलन हो रही हो तो लौकी को काट कर तलवे पर मलें।

● हल्के दस्त में काली चाय (बिना दूध) में नींबू निचोड़ कर पियें।

● हृदय रोगियों के लिए पेय- जामुन, आम, अर्जुन की छाल ले कर दरदरा कूट लें रात को एक गिलास पानी में उसे भिगो दें, सुबह इसे छान कर एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर इसे पी जायें, यदि साथ ही मधुमेह भी हो, तो शहद न डालें, बल्कि रात में उस गिलास में मेथी के दाने भी भिगो दें. मेथी मधुमेह को नियंत्रित करता है।

● जुकाम के रोगी को हर चीज गर्म ही खानी चाहिए, जैसे खाना, चाय, कॉफी, सूप, दाल आदि।

पीने का पानी गुनगुना होना चाहिए, अचार, चटनी, फ्रिज में रखी कोई चीज या ठंडी चीज न लें।

● जिन बच्चों का कद धीरे-धीरे बढ़ता हो (ज्यादातर 8-10 साल की उम्र के बीच के बच्चों के लिए)- एक खजूर, चार काली किशमिश, एक कप साफ पानी में रात को भिगोयें. सुबह दूध के साथ उन्हें खाने को दें या दूध में डालकर खाने को दें.

● तोतलेपन- इस समस्या से जूझने वाले बच्चों को कुछ समय तक रोज एक हरा ताजा आंवला खिलायें. लाभ होगा.

● आम टॉनिक (शक्ति व स्फूर्तिदायक) आम के 11 ऐसे पत्ते, जो पेड़ पर लगे-लगे ही पीले पड़ गये हों, उन्हें एक लीटर पानी में 4-5 इलायची डालकर तब तक पकायें, जब तक पानी आधा न रह -जाये. फिर उसे उतार कर इच्छानुसार दूध, चीनी डाल कर चाय की तरह पियें. ऐसा करने से कमजोरी दूर होगी.

पाक्षिक पंचांग

20 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक कृष्ण 14 से कार्तिक शुक्ल 11 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
20	अक्टूबर	सोम	कार्तिक कृष्ण	14 दीपावली
21	अक्टूबर	मंगल	----------	30 स्ना.दा. अमावस्या
22	अक्टूबर	बुध	कार्तिक शुक्ल	1 गोवर्धन पूजा
23	अक्टूबर	गुरु	----------	2 भाई दोज
24	अक्टूबर	शुक्र	----------	3
25	अक्टूबर	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
26	अक्टूबर	रवि	----------	5 पांडव पंचमी
27	अक्टूबर	सोम	----------	6 डाला छठ
28	अक्टूबर	मंगल	----------	7
29	अक्टूबर	बुध	----------	8 गोपाष्टमी
30	अक्टूबर	गुरु	----------	9 अक्षय (आंवला) नवमी पंचक 2.15 रात से
31	अक्टूबर	शुक्र	----------	10 पंचक
1	नवम्बर	शनि	----------	11 देवउठनी एकादशी, पंचक
2	नवम्बर	रवि	----------	12 चातुर्मास समाप्त, पंचक

निमाड़ फ्रेश एफपीओ ने प्रधानमंत्री के समक्ष दिया प्रस्तुतिकरण

(दिलीप दसौंधी, मंडलेश्वर, कृषक जगत)। निमाड़फ्रेश किसान उत्पादक कंपनी लि. (एफपीओ) खरगोन को भारत सरकार के 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' एवं 'धन-धान्य योजना' के अंतर्गत गत दिनों नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के समक्ष प्रस्तुतिकरण देने का ऐतिहासिक अवसर मिला।

इस आयोजन में निमाड़ फ्रेश के संचालक श्री बालकृष्ण पाटीदार, सीईओ श्री हरिओम भूरे तथा श्री अभिषेक पाटीदार शामिल हुए। श्री भूरे ने प्रधानमंत्री के सामने 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' एवं 'धन-धान्य योजना' के तहत किसानों को उनके उत्पादन का कैसे वाजिब दाम मिल सकता है और कैसे उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, इसे लेकर अपना प्रस्तुतिकरण दिया गया। यह केवल निमाड़फ्रेश नहीं, बल्कि पूरे खरगोन जिले और निमाड़ क्षेत्र के किसानों के लिए गौरव के क्षण हैं।

निमाड़ फ्रेश एफपीओ ने प्रधानमंत्री से ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायक भेंट करवाने का अवसर उपलब्ध करवाने में खरगोन जिले के स्थानीय प्रशासन, कलेक्टर कार्यालय, जिला पंचायत, नाबार्ड, कृषि विभाग, उद्यानिकी, कृषि विज्ञान केंद्र, जिला सहकारी विभाग, उद्योग विभाग, एवं अन्य संबंधित संस्थाओं/ मंत्रालय, सरकारी विभागों एवं संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है,जिन्होंने इस महत्वपूर्ण यात्रा हेतु निरंतर सहयोग, प्रोत्साहन एवं हर स्तर पर मार्गदर्शन दिया।

सितंबर 2025 में VST टिलर्स की बिक्री में 34% उछाल

3,002 पावर टिलर और 478 ट्रैक्टर बेचकर दिखाई मजबूती

VST टिलर्स ट्रैक्टर लि. ने सितंबर 2025 में भी अपनी मजबूत बिक्री गति जारी रखी है। कंपनी ने इस महीने कुल 3,480 यूनिट्स बेचे, जो पिछले साल इसी अवधि में 2,583 यूनिट्स के मुकाबले 34.73 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

इसमें सबसे अच्छा प्रदर्शन पावर टिलर सेगमेंट का रहा, जहां बिक्री 42.27 प्रतिशत बढ़कर 3,002 यूनिट्स हो गई, जबकि सितंबर 2024 में यह संख्या 2,110 थी। ट्रैक्टर बिक्री में मामूली सुधार हुआ है, जो 1.06 प्रतिशत बढ़कर 478 यूनिट्स हो गई, जबकि पिछले साल यह 473 थी।

VST टिलर्स और ट्रैक्टर बिक्री डेटा- सितंबर 2025

सेगमेंट	सितंबर 2025	सितंबर 2024	वृद्धि %
पावर टिलर्स	3,002	2,110	42.27%
ट्रैक्टर	478	473	1.06%
कुल बिक्री	**3,480**	**2,583**	**34.73%**

वित्त वर्ष 2026 की पहली छमाही (अप्रैल से सितंबर 2025 तक) का प्रदर्शन

वित्त वर्ष 2026 की पहली छमाही में, VST टिलर्स ट्रैक्टर ने कुल 27,405 यूनिट्स बेचीं, जो वित्त वर्ष 2025 के समान अवधि में 19,924 यूनिट्स के मुकाबले 37.55 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि है। यह वृद्धि मुख्य रूप से पावर टिलर सेगमेंट के कारण है, जिसमें 43.31 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और 24,829 यूनिट्स बेचे गए।

इसके विपरीत, ट्रैक्टर की बिक्री में मामूली गिरावट देखी गई, जो 0.88 प्रतिशत कम होकर 2,576 यूनिट्स रह गई। कुल मिलाकर, पावर टिलर की बढ़ती मांग के चलते कुल बिक्री में तेजी आई है, जबकि ट्रैक्टर की बिक्री स्थिर बनी हुई है।

VST टिलर्स और ट्रैक्टर YTD बिक्री रिपोर्ट अप्रैल से सितंबर 2025

सेगमेंट	अप्रैल-सितंबर 2025	अप्रैल-सितंबर 2024	प्रतिशत बदलाव
पावर टिलर्स	24,829	17,325	43.31%
ट्रैक्टर	2,576	2,599	-0.88%
कुल बिक्री	**27,405**	**19,924**	**37.55%**

रैलिस इंडिया का मजबूत नकदी सृजन

तिमाही, छमाही वित्तीय परिणाम घोषित

मुंबई (कृषक जगत)। भारतीय कृषि इनपुट उद्योग में अग्रणी कंपनी रैलिस इंडिया लि. (ए टाटा एंटरप्राइज) ने 30 सितंबर, 2025 को समाप्त तिमाही, छमाही के लिए अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा की। जिसमें Q2 और H1 PAT क्रमश: 4% और 35% बढ़ा है। रैलिस इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. ज्ञानेंद्र शुक्ला ने इन परिणामों की घोषणा की।

चुनौतीपूर्ण मौसम की स्थिति के बावजूद रैलिस इंडिया ने लागत अनुकूलन, अनुशासित संचालन और मजबूत निर्यात वृद्धि के साथ स्थिर लाभप्रदता और मजबूत नकदी सृजन प्रदान किया। तिमाही के दौरान, कंपनी ने रू. 861 करोड़ का राजस्व दर्ज किया, जबकि वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में यह रू. 928 करोड़ था, जो मुख्य रूप से देश के कई हिस्सों में अनियमित और लंबे समय तक हुई बारिश के कारण 7% की गिरावट को दर्शाता है, जिसने क्षेत्र की गतिविधियों और स्प्रे अनुप्रयोगों को प्रभावित किया। पिछले वर्ष की इसी तिमाही में रू. 98 करोड़ की तुलना में PAT 4% बढ़कर रू. 102 करोड़ हो गया। कंपनी का PAT मार्जिन 120 आधार अंकों से बढ़कर 11.8% हो गया। तिमाही के लिए EBITDA रू. 154 करोड़ रहा, जबकि वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में यह रू. 166 करोड़ था। रू. 52 करोड़ के फ्री कैश फ्लो, शून्य बाहरी ऋण और रू. 454 करोड़ के स्वस्थ समापन नकदी और तरल शेष के साथ मजबूत नकदी प्रबंधन जारी रहा।

सितंबर 2025 को समाप्त छमाही के लिए, रैलिस ने रू. 1,818 करोड़ का राजस्व दर्ज किया, जो वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही के रू. 1,711 करोड़ से 6% अधिक है। EBITDA पिछले वर्ष के रू. 261 करोड़ की तुलना में 16% बढ़कर रू. 303 करोड़ हो गया, जबकि PAT वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही के रू. 146 करोड़ की तुलना में 35% बढ़कर रू. 197 करोड़ हो गया। रैलिस इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ. ज्ञानेंद्र शुक्ला ने परिणामों पर टिप्पणी करते हुए कहा लंबे समय तक हुई बारिश के कारण दूसरी तिमाही चुनौतीपूर्ण रही, जिससे खेतों की गतिविधियाँ और उत्पाद प्लेसमेंट प्रभावित हुए। इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, निर्यात में तेजी, विवेकपूर्ण लागत प्रबंधन और बीज व्यवसाय में बेहतर मार्जिन के कारण हमारी लाभप्रदता स्थिर रही। मज़बूत बैलेंस शीट, शून्य बाहरी ऋण और अच्छी नकदी स्थिति हमारे वित्तीय अनुशासन और परिचालन लचीलेपन को दर्शाती है।

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो.** : 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ ड्यूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक
डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

आलू की फसल के लिए सर्वश्रेष्ठ उत्पाद : महावीरा जिरोन पावर प्लस

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कम्पनी आर एम फास्फेट्स एंड केमिकल्स प्रा. लि. का उत्पाद महावीरा जिरोन पावर प्लस एक ऐसा उत्पाद है, जिसमें 6 पोषक तत्वों का मिश्रण होने से यह न केवल आलू की बेहतर पैदावार देता है , बल्कि आलू की गुणवत्ता और उसके आकार में भी वृद्धि करता है। जिन किसानों ने आलू की फसल में इसका इस्तेमाल किया है, उन्हें बेहतरीन उत्पादन मिला है ।

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश के हर जिले में आलू की फसल ली जाती है, लेकिन मालवा क्षेत्र में आलू की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। यहाँ के उन्नत किसान नई तकनीक से कुफरी चंद्रमुखी,कुफरी अशोक, कुफरी चिप सोना-1 जैसी आलू की उन्नत किस्मों से अच्छा उत्पादन प्राप्त करते हैं। आलू की बुवाई 15 अक्टूबर से 20 नवंबर तक कर दी जानी चाहिए। उचित पोषक तत्व प्रबंधन से आलू की बेहतर पैदावार ली जा सकती है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस की विशेषताएं - कम्पनी के सीनियर जीएम एवं हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पांडेय ने इसकी विशेताएं बताते हुए कहा कि आर एम फास्फेट्स एंड केमिकल्स प्रा. लि. का उत्पाद महावीरा जिरोन पावर प्लस सिंगल सुपर फास्फेट आलू की फसल के लिए सर्वश्रेष्ठ उर्वरक है। यह 6 पोषक तत्वों कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, बोरान,मैग्नीशियम और जिंक का मिश्रण है, जिसमें 16% फास्फोरस, 19% कैल्शियम, 11% सल्फर, 0.5% मैग्नीशियम और 0.5% जिंक के अलावा 0.20% बोरान होता है। ये 6 पोषक तत्व आलू कंदों की गुणवत्ता, आकार और भंडारण क्षमता बढ़ाने में सहायक होते हैं। आलू के लिए 5 बैग (250 किलो) की मात्रा / एकड़ अनुशंसित की गई है। इससे किसान को आलू की बेहतर पैदावार मिलती है। बड़े और चमकदार आलू का किसानों को दाम भी बढ़िया मिलता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस से आलू का उत्पादन 120 से 145 क्विंटल/एकड़ संभावित है। विभिन्न कृषि अनुसन्धान संस्थानों के अनुसार महावीरा जिरोन पावर प्लस आलू फसल के लिए सर्वश्रेष्ठ उत्पाद है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में पोषक तत्वों की भूमिका - महावीरा जिरोन पावर प्लस 6 पोषक तत्वों के अद्भुत मिश्रण वाला ऐसा उत्पाद है, जिसमें विभिन्न पोषक तत्व आलू के उत्पादन में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। फास्फोरस की मौजूदगी से जड़ों का अधिक विकास होने से कंद बड़ी संख्या में और जल्दी बनते हैं। जबकि कैल्शियम जड़ों के विकास में मदद करने के अलावा भंडारण क्षमता को भी बढ़ाता है। वहीं सल्फर,आलू की फसल में नाइट्रोजन की क्षमता को बढ़ाता है, जिससे अधिक संख्या में कंद बनते हैं और अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। जिंक से रोग नियंत्रित होते हैं। इस कारण कंद की उपज में वृद्धि होती है। बोरान, फसल की रासायनिक क्रिया में तो सहयोग करता ही है, इसके कारण आलू में फटने की समस्या भी नहीं आती है। आलू की फसल में मैग्नीशियम अति आवश्यक है। इसमें मैग्नीशियम की छठे पोषक तत्व के रूप में अतिरिक्त उपस्थिति महावीरा जिरोन पावर प्लस को सर्वश्रेष्ठ उर्वरक का दर्ज़ा दिलाती है।

डीएपी और महावीरा जिरोन पावर प्लस का तुलनात्मक अध्ययन - डीएपी में जहां 18% नाइट्रोजन होता है, जबकि महावीरा जिरोन पावर प्लस में यह नहीं पाया जाता है। डीएपी में जहां फास्फोरस 46% पाया जाता है, जबकि महावीरा जिरोन पावर प्लस में इसकी मात्रा मध्यम होती है। दूसरी ओर महावीरा जिरोन पावर प्लस में सल्फर, जिंक, कैल्शियम, बोरान, मैग्नीशियम और पोटाश पाया जाता है, जो डीएपी में नहीं होता है। इन पोषक तत्वों के कारण आलू की फसल बढ़िया होती है। सल्फर से कंद की गुणवत्ता बढ़ती है, जबकि जिंक, कंदों के विकास और एंजाइम क्रिया में सहायक होता है। कैल्शियम से कंदों में चमक आती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। कंद को सेट होने और गुणवत्ता के लिए बोरान मदद करता है। मैग्नीशियम, आलू फसल में प्रकाश संश्लेषण और स्टार्च बनाने में सहयोग करता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस में पोटाश नहीं होने से इसकी पूर्ति एमओपी से की जानी चाहिए।

महावीरा जिरोन पावर प्लस के लाभ - डीएपी से आलू के पौधे को सिर्फ नाइट्रोजन और फास्फोरस मिलता है, जबकि महावीरा जिरोन पावर में फास्फोरस के अलावा पांच अन्य आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोन्यूट्रिएंट्स) भी होते हैं, जो फसल को लाभ पहुंचाते हैं। महावीरा जिरोन पावर प्लस के प्रयोग से आलू के कंदों का न केवल आकार बड़ा होता है, बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने के साथ ही इसकी भंडारण क्षमता भी बढ़ जाती है। डीएपी के प्रयोग से आलू की फसल में ज़िंक, कैल्शियम और बोरान की कमी हो जाती है, जो कि आलू के अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक है। इसकी पूर्ति महावीरा जिरोन पावर प्लस से हो जाती है।

आलू की फसल में पोषक तत्व प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा KG 48:40:40) - बुवाई के समय महावीरा जिरोन पावर प्लस 250 किलो, एमओपी 66 किलो और यूरिया 35 किलो और सिमट्रॉन 4 किलो का इस्तेमाल करना चाहिए। फिर 25 -30 दिन के बाद 35 किलो यूरिया और 25 किलो मैग्नीशियम सल्फेट और 200 मिलीलीटर बेलेको का प्रयोग करना चाहिए। 50 -55 दिन के बाद यूरिया 35 किलो, एमिट्रोन जेड 250 मि .ली.और बोरट्री 200 मिली लीटर का इस्तेमाल करना चाहिए। इसके अलावा जल घुलनशील उर्वरक 4 -5 ग्राम / लीटर पानी में 25 -30 दिन की अवधि में 19:19:19 , 45 -50 दिन की अवधि में 12:61:00 का , 50 -55 दिन की अवधि में सीएन +बी+00:52:34 तथा 80 - 85 दिन की अवधि में 13:00:45 / 00:00:50 का छिड़काव अवश्य करें। इसके बेहतर परिणाम मिलते हैं। **अधिक जानकारी के लिए कंपनी के कस्टमर केयर नंबर 8956926412 पर सम्पर्क करें।**

आलू की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 48:40:40)

अवधि	ZIRON Power+ KG	MOP KG	UREA KG	SYMTRON KG	AMITRON-Z ML	BALECO ML	BORTRY ML	MgSO4 KG
बुवाई के समय	250	66	35	4	0	0	0	0
25-30 दिन बाद में	0	0	35	0	-	200	-	25
50-55 दिन बाद में	0	0	35	0	250	0	200	0
कुल मात्रा KG/GM/ML	**250**	**66**	**105**	**4**	**250**	**200**	**200**	**25**
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम /लीटर पानी में	25-30 दिन की अवधि में 19:19:19, 45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B+ 00:52:34 का तथा 80-85 दिन की अवधि में 13.00.45/00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करें।							

बीएएसएफ ने चीन में उत्पादन के विस्तार के साथ 10वीं वर्षगांठ मनाई

नानजिंग, चीन (कृषक जगत)। बीएएसएफ ने अपने नानजिंग संयंत्र में 3-(डाइमिथाइलैमिनो) प्रोपाइलामाइन (DMAPA) और पॉलीएथेरामाइन (PEA) उत्पादन के विस्तार और 10वीं वर्षगांठ का जश्न मनाया। जुलाई 2025 में विस्तारित संयंत्रों के चालू होने के साथ, संयंत्र की वार्षिक DMAPA उत्पादन क्षमता लगभग दोगुनी हो गई है, जबकि PEA क्षमता में लगभग 25% की वृद्धि हुई है।

बीएएसएफ के इंटरमीडिएट्स एशिया पैसिफिक के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री माइकल बेकर ने कहा, 'पिछले एक दशक में, हमारे ग्राहकों के साथ घनिष्ठ सहयोग हमारी सफलता की कुंजी रहा है। यह विस्तार हमारी जवाबदेही और विश्वसनीय आपूर्ति और उच्च-गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करने की हमारी क्षमता को और मजबूत करता है, जिससे एशिया प्रशांत क्षेत्र में हमारे ग्राहकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए एक ठोस आधार तैयार होता है।'

इसका ग्राहकों को कार्बन उत्सर्जन में कमी का लाभ मिला, क्योंकि बीएएसएफ नानजिंग संयंत्र में उत्पादित संपूर्ण अमीन पोर्टफोलियो 100% नवीकरणीय बिजली पर स्थानांतरित हो गया। 2023 से, बीएएसएफ ने अपने नानजिंग संयंत्र में उत्पादित अपने संपूर्ण अमीन पोर्टफोलियो को 100% नवीकरणीय बिजली में परिवर्तित कर दिया है। DMAPA और PEA के अलावा , यह टर्ट-ब्यूटाइलमाइन (tBA), एन-ऑक्टाइलमाइन (NOA), और 1,2-प्रोपाइलेंडियामाइन (1,2-PDA) पर भी लागू होता है। इस परिवर्तन ने आधार वर्ष 2020 की तुलना में वार्षिक CO2 उत्सर्जन में लगभग 9,800 टन की कमी की है।

बीएएसएफ के उपाध्यक्ष (व्यावसायिक प्रबंधन अमीन, एसिटिलीनिक्स और कार्बोनिल डेरिवेटिव्स, इंटरमीडिएट्स एशिया पैसिफिक) श्री जोआचिम श्मिट-लेथॉफ ने कहा 'दुनिया के सबसे बड़े अमीन उत्पादकों में से एक होने के नाते, बीएएसएफ अपने नानजिंग संयंत्र में उत्पादित अमीनों के लिए 100 प्रतिशत नवीकरणीय बिजली में परिवर्तित करके स्थिरता की ओर एक कदम बढ़ा रहा है। यह कदम कार्बन उत्सर्जन को कम करके बीएएसएफ और इस क्षेत्र में हमारे ग्राहकों, दोनों के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है, जिससे हम स्थायी मध्यवर्ती उत्पादों के लिए उनके पसंदीदा भागीदार बनने के और करीब पहुँचते हैं।'

मुख्यमंत्री ने दी एमएसएमई इकाइयों को 197 करोड़ की राशि

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में आयोजित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमियों के सम्मेलन में विभाग की योजना के तहत 700 एमएसएमई इकाइयों को सिंगल क्लिक से 197 करोड़ रुपये से अधिक की प्रोत्साहन सहायता राशि वितरित की। इस अवसर पर एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप भी उपस्थित थे। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने स्टार्टअप्स को सहायता राशि के चेक भी प्रदान किए।

रबी सीजन के लिए सिंगल सुपर फास्फेट उर्वरकों की दरें तय

भोपाल (कृषक जगत)। म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ (मार्कफेड) ने रबी सीजन 2025-26 के लिए सिंगल सुपर फास्फेट (दानेदार एवं पावडर) उर्वरक की विक्रय दरें तय कर दी हैं। नई तय दरों के मुताबिक अब सीजीएसटी- एसजीएसटी सहित किसानों को 50 किलो की सिंगल सुपर फास्फेट की बोरी (पावडर) 465 रु. तथा दानेदार 505 रुपए में मिलेगी। इसी प्रकार बोरोनेटेड सिंगल सुपर फास्फेट (पाउडर) की 50 किलो की बोरी 495 रुपए, (दानेदार) 535 रुपए में किसानों को उपलब्ध होगी। वहीं जिंककेटेड सिंगल सुपर फास्फेट (पाउडर) 50 किलो की बोरी 490 रुपए एवं (दानेदार) 530 रुपए में मिलेगी। यह निर्णय उर्वरक समन्वय समिति की बैठक में लिया गया।

गुणवत्ता युक्त अनाज उत्पादन प्राकृतिक खेती से संभव : डॉ. राजपूत

क्षेत्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती संस्थान की कार्यशाला

भोपाल (कृषक जगत)। आधुनिकता के दौर में अंधाधुंध रसायनों के प्रयोग से एक ओर अनाज उत्पादन में वृद्धि वहीं दूसरी ओर इसकी गुणवत्ता में गिरावट देखी जा रही है। भूमि की अनाज उत्पादन क्षमता में सभी पोषक तत्वों की पूर्ति लंबे समय तक बनाए रखने में प्राचीन कृषि पद्धति अपनाना जरूरी हो गया है। प्रचलित पद्धतियों में जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, परंपरागत खेती, अग्निहोत्र आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। रसायन को छोड़कर सभी कृषि पद्धतियों को एक ही मंच पर लाने का प्रयास गत दिवस भोपाल में हुई राज्य स्तरीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती संस्थान की कार्यशाला में देखने को मिला। क्षेत्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केंद्र (भारत सरकार) नागपुर द्वारा आयोजित कार्यालय में गुजरात, महाराष्ट्र के साथ प्रदेश के किसानों ने भाग लिया। इन तकनीकों से जुड़े शोधकर्ताओं के अनुभव सुनने का मौका अन्य किसानों को मिला। क्षेत्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती संस्थान के निदेशक डॉ. अजय सिंह राजपूत ने संस्था द्वारा इस दिशा में किये जा रहे कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया।

कार्यक्रम को श्री नरेंद्र भाई (गुजरात), श्री ताराचंद बेलजी (जबलपुर), श्री आकाश चौरसिया (सागर), श्री अशोक मीणा भोपाल ने सम्बोधित किया।

डॉ. यतिन मेहता परियोजना संचालक नीमच के अनुसार औषधीय एवं सुगंधित खेती को प्राकृतिक एवं जैविक तरीके से उत्पादन किया जाए तो उसका अधिक दाम किसानों को मिल सकता है।

कार्यक्रम में राज्य प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल के संचालक श्री जी.पी. प्रजापति, संयुक्त संचालक कृषि भोपाल संभाग श्रीमती सुमन प्रसाद, पतंजलि संस्थान के निदेशक डॉ. राजेश सक्सेना, संचालनालय कृषि के उप संचालक श्री जितेंद्र सिंह परिहार, खरगोन के श्री ओमप्रकाश पाटीदार, श्री रत्नेश सिंह, कार्यक्रम की नोडल अधिकारी सहायक संचालक कृषि श्रीमती माधुरी वानखेड़े, भारतीय वन प्रबंध संस्थान के डॉ. मनोज सिंह, सहायक संचालक कृषि भोपाल श्री अमित सिंह, जैविक एवं प्राकृतिक खेती संस्थान नागपुर के डॉ. स्वप्निल मगर, श्री एल. के. नाईक, सेवानिवृत्त कृषि अधिकारी श्रीमती आशालता पाठक विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि के साथ सैकड़ों कृषक उपस्थित थे।

कृषक जगत सम्मानित

जैविक एवं प्राकृतिक खेती पर आधारित उत्कृष्ट कृषि साहित्य प्रकाशन के लिए कार्यशाला में कृषक जगत को सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार प्रकाश दुबे ने ग्रहण किया।